मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

MAY 15

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी

दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

बेक़ाबू ज़बान

आप स०अ० ने इरशाद फ़रमाया कि "इनसान के झूठा होने के लिए इतनी बात ही काफ़ी है कि वह हर बात दूसरों को सुनाने लगे जो उसने कहीं से भी सुन ली हो।" इस बात का मंशा अस्ल में ये बताना है कि एक सच्चे मुसलमान के लिए जायज़ नहीं है कि वो हर कच्ची पक्की बात कहीं से सुनकर उसे आगे चलाए। इस तरह अफ़वाहें फैलती हैं और अफ़वाहों के गर्द व गुबार में हक़ीक़त का चेहरा बिगड़ कर रह जाता है। कुरआन करीम ने भी ऐसी बेहक़ीक़त अफ़वाहें फैलाने की अत्यधिक निंदा की है। आप स०अ० के ज़माने में मुनाफ़िक़ों का ये ढंग था कि वो मुसलमानों के बीच ऐसी अफ़वाहें फैलाते रहते थे, जिनसे लोगों में बेचैनी और तश्वीश पैदा होती थी। "जब भी अमन या ख़ौफ़ के बारे में उन्हें कोई चीज़ पहुंचती है, वो उसे फैलाने में लग जाते हैं, अगर वो उसे (फैलाने के बजाए) ज़िम्मेदार लोगों तक पहुंचाते तो ऐसे लोग उसकी हक़ीक़त जान लेते जो इस तरह की तहक़ीक़ कर सकते हैं। (सूरह निसाः ८३) कुरआन व सुन्नत के इन इरशादों से कुरआन का जो सामूहिक मिज़ाज सामने आता है वो ये है कि जब तक किसी बात की मुनासिब तहक़ीक़ न हो जाए, उस वक़्त तक उसे दूसरों के सामने बयान नहीं करना चाहिए। अगर कोई शख़्स इस तरह की बेतहक़ीक़ बात को यक़ीन से बयान करे तब तो ज़ाहिर है कि वह ग़लत बयानी के अन्तर्गत आता है। लेकिन अगर लोग कहते हैं का पर्दा रखकर बयान करे लेकिन मक़सद यही हो कि सुनने वाले उसे सच मान लेंगे तब भीऐसा नहीं करना चाहिए। अस्ल में इस्लाम का मक़सद ये है कि हर मुसलमान समाज का एक ज़िम्मेदार नागरिक बनकर ज़िन्दगी गुज़ारे। उसके मुंह से जो बात निकले वो खरी और सच्ची हो और वो अपने किसी काम या बात से ग़ैर ज़िम्मेदारी का सुबूत न दे। अल्लाह तआला का इरशाद है कि "इनसान जो भी बात मुंह से निकालता है उसे (सुरक्षित करने के लिए) एक निगेहबान हर वक़्त तैयार है। मतलब ये कि इनसान ये न समझे कि जो बात वो ज़बान से निकाल रहा है वो फ़िज़ा में तहलील होकर फ़ना हो जाती है, बल्कि वाक़्या ये है कि मुंह से निकली हुई हर बात रिकार्ड हो रही है इसीलिए आप स०अ० की बहुत सी हदीसों में ज़बान को क़ाबू में रखने की ताकीद फ़रमायी गयी है।

लेकिन इन सभी शिक्षाओं के बाद भी हमारी ज़बान इतनी बेक़ाबू हो गयी है कि उसके इस्तेमाल में ज़िम्मेदारी की बात ही बाक़ी न रही। जो कोई उड़ती हुई बात कहीं से हाथ आ गयी, उसे तहक़ीक़ के बग़ैर दूसरों तक फैलाने और पहुंचाने में कोई झिझक महसूस नहीं की जाती और लोग बेधड़क एक दूसरे से इस तरह बयान करते चले जाते हैं कि फ़िज़ा में अफ़वाहों का एक तूफ़ान हमेशा बरपा रहता है। यूं तो हर तरह ही की ख़बरों में एहतियात की ज़रूरत है लेकिन जिस ख़बर के नतीजे में किसी दूसरे पर कोई इल्ज़ाम लगता हो, उसमें तो एहतियात की ज़रूरत और भी ज़्यादा है। क्योंकि इससे किसी दूसरे आदमी की इज़्ज़त व आबरू का मसला जुड़ा हुआ है।

मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:७ मई २०१७ ई० वर्ष:७

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री- दारे अरफ़ात

सह सम्पादक
मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नारवुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुदक
मो० हसन नदवी

अनुवादक
मोहम्मद सैफ़

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

ज़लज़ला – ख़ुदा की निशानी.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

तौबा व इस्तिग़फ़ार.....३
मौलाना अब्दुलल्लाह हसनी नदवी रह०

सीरत–ए–नबवी – कुरआन करीम के आइने में...४
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अज़ान की शरई हैसियत.....७
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

हिन्दुत्व की यलग़ार कहां से कहां तक.....९
मौलाना अब्दुल हमीद नोमानी

नबी करीम स०अ० की पत्नियाँ ११

पारिवारिक शांति में पतियों की ज़िम्मेदारी.....११
अब्दुस्सुब्हान नाखुदा नदवी

इस्लाम में सफ़ाई सुथराई.....१३

जन्नती व्यापारी.....१४
मुहम्मद अरमुग़ान नदवी

इस्लाम की सही तस्वीर.....१५
अब्दुल्लाह ख़ालिद क़ासमी

सूर्य नमस्कार और मुसलमानों का पक्ष.....१७
सबाह इस्माईल नदवी

मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुहिम का परिदृष्य.....१८
जनाब आरिफ़ अज़ीज़

ईमान की हरारत.....२०
अबुल अब्बास ख़ाँ

सम्पादक: बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

प्रति अंक 10रू

वार्षिक 100रू०

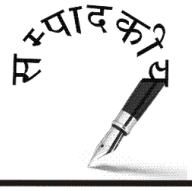

सम्पादकीय

ज़लज़ला — ख़ुदा की निशानी

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

वर्तमान में आने वाले भूकम्प ने नेपाल और भारत को हिलाकर रख दिया। दुनिया के विभिन्न देशों ने हमदर्दी प्रकट की। सहायतार्थ टीमें साज़ो सामान के साथ पहुंच गयीं। धर्म व जाति के ऊपर उठकर इन्सानों ने इन्सानों से हमदर्दी का बर्ताव किया। ज़लज़ले के ज़ाहिरी कारणों का भी निरीक्षण किया गया और इसके वैज्ञानिक कारण भी बताए गये। आगे के लिए उपाय करने की ओर भी ध्यान दिया गया। और आज ही की ख़बर है कि बहुमंज़िला इमारतों का निरीक्षण किये जाने का उपाय दिया गया है। ये सब कुछ हुआ लेकिन इसके वास्तविक कारण की ओर किस की नज़र गयी। ज़मीन के अन्दर की जो प्लेटें अपनी जगह से खिसक गयीं, तो किसने खिसकायीं? और क्यों खिसकायीं? मालिकों का मालिक और सर्वशक्तिमान जिसने पहाड़ों को ज़मीन के संतुलन को बनाए रखने के लिए बनाया है और इन्सानों के लिए ज़मीन को अपनी जगह ऐसा सदृढ़ बनाया कि इन्सान इसी में सबकुछ करता है और वह इन्सानों के लिए सबकुछ सहती है मगर सर नहीं उठाती। अल्लाह ने सबकुछ इन्सान के लिए ही पैदा किया और इन्सान को अपने लिए पैदा किया। आख़िर क्या वजह हुई कि ज़मीन ने करवट ली और न जाने कितने लोग काल के गाल में समा गये। कितनी गगनचुम्बी इमारते ज़मीन में धंस गयीं। ये सब क्यों हुआ इस पर विचार करने की आवश्यकता थी।

यदि किसी क़ौम के पास इसका ज्ञान था तो वे मुसलमान थे जिनको अल्लाह ने हिदायत की किताब भी दी और नबी करीम स0अ0 की शरीअत भी दी। आप स0अ0 ने इसके कारणों को बयान फ़रमाया है। एक हदीस में आप स0अ0 ने ज़लज़ला और ज़मीन व आसमान की आफ़तों के पन्द्रह कारण बयान फ़रमाएं हैं:

1– जब ग़नीमत के माल को अपना समझ लिया जाए। 2– अमानत को माल–ए–ग़नीमत समझा जाने लगे। 3– ज़कात को टैक्स समझ लिया जाए। 4– इल्म केवल दुनिया की प्राप्ति के लिए प्राप्त किया जाने लगे। 5– आदमी अपनी बीवी की बात माने। 6– माँ की नाफ़रमानी करे। 7– दोस्त की दिलदारी करे। 8– बाप के साथ बदसुलूकी करे। 9– मस्जिदों में शोर होने लगे। 10– क़ौम का लीडर सबसे ज़लील इन्सान को मान लिया जाए। 11– आदमी की इज़्ज़त उसके शर से बचने के लिए की जाए 12– जब शराब पी जाने लगे। 13– मर्द रेशम का इस्तेमाल शुरू कर दें। 14– गाने वालियां और संगीत के यंत्र अपनाएं जाएं। 15– और बाद वाले गुज़रे हुए लोगों पर लानत भेजने लगें। तो फिर उस वक़्त लाल आंधियों और ज़लज़ला, धंसा दिए जाने और सूरत बिगाड़ दिये जाने और पत्थरों की बारिश का इन्तिज़ार करना चाहिए और ऐसी निशानियों का इस्तेमाल करना चाहिए जो ताबड़तोड़ आना शुरू हो जाएं, जैसे पुरानी तस्बीह का धागा टूट जाए और दाने बिखरने लगें। (सुनन तिरमिज़ी)

ये हदीस इबरत का पाठ है विशेषतय: ईमान वालों को झंझोड़ने वाले हैं। दुनिया के वर्तमान हालात और विभिन्न देशों में आयी आसमानी व ज़मीनी आफ़त का क्रम हमें क्या पाठ पढ़ाता है। हदीस में जो कारण बयान किये गयें हैं आज का समाज सौ प्रतिशत उसमें पड़ा है। गाने–बजाने का सिलसिला है, बेहयाई के काम फ़ैशन में शामिल हैं और मोबाइल ने इसको ऐसा आम कर दिया है कि घर–घर ये बला आम हो गयी है। ज्ञान का व्यापारीकरण हो गया है जिसमें केवल लेन–देन चलता है। अमानतदारी विदा हो चुकी है। इबादतों को ज़्यादा से ज़्यादा एक मजबूरी के तौर पर अपनाया जाता है और पिछले उलमा व इमामों पर टिप्पणी को शायद उन्नति का स्तर समझा जाता है। ये वो कारण हैं जिनके परिणाम में दुनिया में एक भूचाल सा आया हुआ है।

इन हालात में सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदारी उलमा की है। ईमान वालों की है जिनके सामने एक व्यवस्था है और वो वास्तविकताएं उनके सामने हैं जो दूसरों के सामने नहीं। अल्लाह की तरफ़ से ये एक तम्बीह है और अगर इससे सबक़ लिया जाए और हालात को बेहतर बनाने की कोशिश तेज़ कर दी जाए, जिनमें सबसे पहली ज़िम्मेदारी ख़ुद अपनी है, हर शख़्स अपनी फ़िक्र करे, अपना निरीक्षण करे और अपनी कमज़ोरी को दूर करने का प्रयास करे तो समाज का रुख़ ठीक हो सकता है और यक़ीनन अगर हम सबक़ ले तो मुसीबतें भी अल्लाह की रहमत ही हैं कि ये आख़िरत के बड़े अज़ाब से बचने का और अल्लाह की तरफ़ रुजु होने का ज़रिया हैं और अगर ख़ुदा न करे हम केवल ज़ाहिरी कारणों और वैज्ञानिक कारणों में ही रह गये और हमने इन आफ़तों से सबक़ न लिया और हमारी ज़िन्दगी में कोई बदलाव न पैदा हुआ तो आगे अल्लाह ही हाफ़िज़ है।

तौबा व इस्तिग़फ़ार

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

अल्लाह तआला ने इन्सान को ग़लती करने वाला बनाया है। कोई इन्सान ख़ता से ख़ाली नहीं है। इसी लिए फ़रमाया गयाः "तुम सब के सब ख़ता करने वाले हो, लेकिन तुम में अच्छे ख़ता करने वाले वे हैं जो तौबा करने वाले हैं।" मालूम हुआ कोताही तो हर एक से होगी। कोई ऐसा नहीं है जिससे कोताही या ग़लती न हो। हर एक की अपने–अपने एतबार से कोताही होती है। जैसे बड़े गुनाह करने वाले, फिर छोटे गुनाह करने वाले, फिर अमली गुनाह करने वाले, फिर अक़्ली गुनाह करने वाले, और बड़े और छोटो में फ़र्क़ ये है कि बड़ों के गुनाह अमली नहीं होते और अगर होते हैं तो बहुत कम होते हैं। उनके गुनाह ज़बान व जिस्म से नहीं होते। लेकिन ख़्यालों में आ जाते हैं। ज़हनों में इस तरह की चीज़ें आ जाती है जिस पर पकड़ नही है। क्योंकि जब तक बुरे ख़्यालात किसी इन्सान के दिमाग़ में रहें वो अमल में या ज़बान पर न आएं और आदमी उनसे घबराता रहे और उन पर शर्मिन्दा होता रहे तो उस पर पकड़ नहीं लेकिन अगर यही ख़्यालात इन्सान की ज़बान व अमल में आ जाए तो उस पर पकड़ होगी। इसीलिए बड़ों और छोटों में ये फ़र्क़ है कि बड़ों को मुश्किल से बुरा ख़्याल आता है लेकिन आता है तो शर्मिन्दगी होती है जबकि आम तौर से बड़ों को भी इस तरह के ख़्यालात आ जाते हैं। क्योंकि अल्लाह तआला ने इन्सान को बनाया ही इसी तरह है कि इस तरह के ख़्यालात कभी–कभी उसको आ जाते हैं। यहां तक कि सहाबा किराम रज़ि0 भी फ़रमाया करते थे कि कुछ ऐसे ख़्यालात आते हैं कि ऐसा लगता है कि हमज ल कर कोयला हो जाएं तो बेहतर है लेकिन हम इसको बयान न करें। क्योंकि अल्लाह तआला ने इन्सान के अन्दर जो दिमाग़ रखा है उसकी हैसियत सड़क की है। या जीटी रोड़ की तरह है जिस पर सब सवारियां चलती हैं लिहाज़ा इसके लिए ज़रूरी ये है कि ये सब सवारियां गुज़र जाएं बीच में न रुकें क्योंकि रुकने में जाम लग जाएगा, और अगर जाम लगेगा तो नुक़सान भी होगा। इसलिए ख़्याल आए और चला जाए ये सही है और इस पर और ये हो कि इन्सान को इस पर लगातार शर्मिन्दगी होती रहे क्योंकि जितना इन्सान को शर्मिन्दगी होगी उतना ही वो अल्लाह वाला होगा। इसीलिए जितने अल्लाह वाले होते हैं उनको शर्मिन्दगी भी बे इन्तहा होती है।

शर्मिन्दगी का मतलब ये है कि इन्सान को अपने गुनाह नज़र आएं और अपनी ख़राबियां और ऐब उसको दिखाई दें वरना इन्सान को अल्लाह ने कुछ ऐसा बनाया है कि अपने ऊपर उसकी नज़र पड़ती नहीं हैं बल्कि दूसरों पर पड़ती है। जैसे इन्सान चेहरा अपना नहीं देखता है बल्कि दूसरों का देखता है ऐसे ही इन्सान अपने ऐब नहीं देखता बल्कि दूसरों के ऐब ज़रूर देखता है। हालांकि अगर इन्सान अपने ऐब देखने लगे तो उसी वक़्त वो कहीं से कहीं पहुंच जाएगा यानि उसका मक़ाम बुलन्द हो जाएगा और धमन्ड, फ़र्ख जैसी तमाम बीमारियां ख़त्म हो जाएंगी क्योंकि इन बीमारियों की जड़ यही है कि इन्सान अपने को नहीं देखता है और अगर अपने को देख लेगा तो ग़ैरों पर नज़र नहीं पड़ेगी और उसके बाद घमन्ड के आने का सवाल ही नहीं। हज़रत मौलाना मुहम्मद अहमद रह0 ने कहा थाः

हिल गयी जबसे चश्मे बसीरत,
ख़ुद अपनी नज़र में गिर गये हम।

अस्ल में यही हक़ीक़त है कि जब इन्सान की निगाह अपने ऊपर पड़ने लगती है तो दूसरों को क्या देखेगा, क्योंकि इसके बाद वो यही सोचेगा कि दिन रात मैं ख़ुद इतने गुनाह करता हूं, तो दूसरों के गुनाह को क्या देखूं?लिहाज़ा इसका नतीजा ये होगा कि उसके अन्दर से घमन्ड और इतराना भी ख़त्म हो जाएगा लेकिन अगर ऐसा नहीं है तो जो जितना छोटा होगा उतना ही उसके अन्दर घमन्ड होगा क्योंकि उसको ख़ुद अपनी नज़र से अपना ऐब नज़र नहीं आता इसलिए अपने को देखने की कोशिश करनी चाहिए और जब उसके अन्दर शर्मिन्दगी की कैफ़ियत पैदा हो जाएगी तो उसकी पहचान ये होगी कि वो कभी घमन्ड नहीं करेगा क्योंकि शर्मिन्दा आदमी कभी घमन्डी नहीं हो सकता। इसलिए कि शर्मिन्दगी और घमन्ड में अन्तर है। ये दोनों एक साथ नहीं होगें इसलिए रिवायत में आता हैः "यानि शर्मिन्दगी सरापा तौबा है।" इसीलिए तौबा की शर्तों में शर्मिन्दगी का होना बहुत अहम है। जैसे कि फ़रमाया गयाः "यानि हज के अन्दर वकूफ़–ए–अरफ़ा अस्ल है।" वैसे ही अस्ल तौबा शर्मिन्दगी है, जबान की तौबा अस्ल नहीं है।

सीरत-ए-नबवी

कुरआन करीम के आइने में

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हज़रत आयशा रज़ि0 से जब आप स0अ0 की सीरत व अख़लाक़ के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फ़रमायाः "आपके अख़लाक़ देखने हों तो कुरआन देखो।" (मुसनद अहमदः 26044)

कुरआन मजीद के हुक्मों व नसीहतों की अमली तस्वीर आप स0अ0 की ज़िन्दगी है। आप स0अ0 ने इसके नियमों व आधार को अपनी मुबारक ज़िन्दगी से ऐसा खोला है कि वह शरीअत की खुली किताब है। न कुरआन मजीद को आप स0अ0 की मुबारक ज़िन्दगी से अलग किया जा सकता है और न आप स0अ0 की ज़िन्दगी को कुरआन से अलग किया जा सकता है। और जो लोग दोनों को अलग–अलग करना या देखना चाहते हैं वे दीन व शरीअत के साथ बड़ा जुल्म करते हैं। वर्तमान समय की इन्तिहा पसंदियों ने न जाने क्या–क्या गुल खिलाए हैं। एक ओर वे लोग हैं जो शरीअत को कुरआन से अलग करके उसको अपने अन्दाज़ से पेश करते हैं। दूसरी ओर कुछ लोग केवल कुरआन मजीद को दीन की बुनियाद बताकर हदीस व सुन्नत से किनारा कर लेते हैं। हक़ीक़त में ये लोग वो हैं जो दीन की समझ नहीं रखते और जितना हिस्सा उनकी निगाहों के सामने आ जाता है, उसको पूरा दीन समझ लेते हैं। इसके नतीजे में ख़ुद भी गुमराह होते हैं और न जाने कितनो को गुमराह करते हैं।

कुरआन मजीद अल्लाह का कलाम है और एक तरबियत करने वाली किताब है। इसमें एक तरफ़ बार–बार आप स0अ0 को ख़िताब करके उम्मत की तरबियत के ऐसे नुस्ख़े नबी अकरम स0अ0 को अता किए गये हैं कि उनकी रोशनी में आप स0अ0 के साथ का फ़ायदा उठाकर सहाबा किराम (रज़ि0) जैसी पवित्र जमाअत तैयार हो गयी। जिसको सारी उम्मत के लिए मुअल्लिम व मुरब्बी क़रार दिया गया। दूसरी ओर आप स0अ0 की सीरत आप स0अ0 की विशेषताओं व श्रेष्ठताओं को अक्सर उम्मत के सामने पेश किया गया ताकि उम्मत इन विशेषताओं व अख़लाक़ को अपना करके सारी इनसानियत के लिए नमूना बन सके और फिर आप स0अ0 के उम्मत पर जो अधिकार होते हैं जिनको समझे बग़ैर ये उम्मत अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा नहीं कर सकती है। और जिसका यक़ीन व एतक़ाद ईमान की पहचान और उसके बग़ैर एक ईमान वाला ईमान वाला कहलाने के लायक़ नहीं। इन अधिकारों को भी बहुत स्पष्ट रूप से बयान कर दिया गया है। इस प्रकार कुरआन मजीद का नबी करीम स0अ0 से जो रिश्ता है वह इतना साफ़ कर दिया गया है कि दोनों को एक दूसरे से अलग किया ही नहीं जा सकता है। और यहीं से यह बात खुल जाती है कि सीरत व सुन्नत के बग़ैर कुरआन समझने के रास्ते खुल ही नहीं सकते। और अपनी अक़्ल से ग़ौर करने वाला ऐसी ठोकर खाता है कि वो अल्लाह की किताब को अपनी राय व मंशा के ताबे कर देता है औरः "उसके ज़रिए से वो बहुतों को गुमराह करेगा।" का मिस्दाक़ बन जाता है।

ये उम्मत ख़ैर उम्मत कहलायी और इसलिए कहलायी कि ये आख़िरी नबी की उम्मत है। इसका वजूद आप स0अ0 से जुड़ा हुआ है। एक लम्हे के लिए अगर इस संबंध का काट दिया जाए तो ये वास्तव में पूरी उम्मत के लिए मौत के बराबर है। इसका वजूद ही इसी पर आधारित है कि वो अपने रिश्ते को अपने नबी से मज़बूत रखे और अल्लाह की किताब की समझ का जो रास्ता आप स0अ0 पर वही के द्वारा प्राप्त हुआ उसी रास्ते पर आगे बढ़ती रहे।

वही और साहबे वही (आप स0अ0) के संबंध को साधारण संदेश लाने वाले का जो संदेश के साथ संबंध होता है उस पर हरगिज़ मत सोचिए। कई बार पैग़ाम पहुंचाने वाला ये भी नहीं जानता कि ये पैग़ाम क्या है? अल्लाह की वही को आप स0अ0 पर उतारा ही इसलिए गया कि आप स0अ0 के द्वारा उसको इन्सानों के लिए खोला जाए और उसकी अमली तफ़सीर की जाए। जो किसी दूसरे के लिए मुमकिन ही नहीं। और फिर इस कुरआन की वही के अलावा अल्लाह तआला ने आप स0अ0 के पाक दिल पर बहुत कुछ नाज़िल फ़रमाया और उसको भी वही क़रार दे दिया गयाः "और वो ख़्वाहिश से नहीं कहते। वो तो सिर्फ़ वही है जो उन पर की जाती है।"

आप स0अ0 के ज़िम्मे जैसे इसकी तब्लीग़ थी जैसा कि इरशाद हैः "ऐ रसूल जो आप पर उतरा है उसे आप पहुंचा दीजिए।" (सूरह माइदाः 68) इसी तरह उन आदेशों की वज़ाहत भी थी जिनको समझना किसी और के लिए संभव नहीं था। इसीलिए इरशाद हुआः "और (किताब)

नसीहत आप पर इसलिए उतारी ताकि आप लोगों के लिए उन चीज़ों को खोल दें जो उनकी तरफ़ उतारी गयीं हैं।" (नहलः 44)इसी तरह अम्बिया को हलाल व हराम करना उनके मनसब में दाख़िल थाः "और उनके लिए पाक चीज़े हलाल करेगा और गन्दी चीज़ें उन पर हराम करेगा।" (आराफ़ः 157) "अहले किताब में से उन लोगों में से जंग करो जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं लाते और अल्लाह और उसके रसूल की हराम की हुई चीज़ों को हराम नहीं मानते।" (तौबाः 29) इसी प्रकार उसकी अमली तफ़सीर और अधिक साफ़ तौर पर और तफ़सील के साथ ज़रूरी थी जिनमें बहुत सी बातें कुरआन मजीद में नहीं थी बल्कि आप स0अ0 के पाक दिल पर उनको उतारा गया था और आप स0अ0 ने इसकी तफ़सील बयान फ़रमायी। इसीलिए बार–बार इत्तेबा–ए–रसूल का हुक्म दिया गया है और इसीलिए

"और रसूलुल्लाह स0अ0 की ज़ात में तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना है।" का ऐलान हुआ और ख़ुद भी आप स0अ0 ने एक हदीस में इसकी और साफ़ किया और उन ख़तरों से भी आगाह किया जो आप स0अ0 के पेशनज़र थे। इरशाद हुआः "हज़रत मेक़दाद बिन मअद यकरब आप स0अ0 से रिवायत करते हैं कि आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमायायः साफ़ सुन लो मुझे कुरआन मजीद और उसी के मिसल अता किया गया है, सुन लो क़रीब है कि एक ज़माना ऐसा आएगा जिसमें आदमी सैराब होकर अपनी मसहरी पर टेक लगाए हुए होगा और उसका ये दावा होगा कि तुम्हारे लिए सिर्फ़ यही कुरआन काफ़ी है, लिहाज़ा इसमें तुम जो चीज़ हलाल पाओ, उसको हलाल जानो, और जो चीज़ हराम पाओ, उसको हराम जानो, सुन लो कि तुम्हारे लिए पालतू गधे का गोश्त जायज़ नहीं और न ही हर दांत वाला दरिन्दा और न ही उस शख़्स का गिरा पड़ा सामान उठाना रवा है जिससे अहद व पैमान लिया गया हो इल्ला ये कि वो इससे बेनियाज़ हो, और जो किसी के यहां मेहमान बने तो वहां के लोगों पर उसकी ज़ियाफ़त ज़रूरी है, अगर वो लोग ऐसा नहीं करेंगे तो उसी के बराबर सज़ा भी दी जानी चाहिए।" (सुनन अबी दाऊदः 4606)

ये रसूल का नमूना ही है जिसको नजात की ज़मानत बताया गया है और कह दिया गया है कि जिसको अल्लाह से मुलाक़ात और आख़िरत के दिन का यक़ीन हो उसको चाहिए कि वो उसकी तैयारी रसूलुल्लाह स0अ0 के नमूने पर चल कर करे। और इस काम को सहूलियत के साथ अपनाने का नुस्ख़ा भी बताया गया कि जितना अल्लाह का ध्यान पैदा किया जाएगा और उसका ज़िक्र किया जाएगा उतना ही दिल व दिमाग़ रसूलुल्लाह स0अ0 का नमूना अपनाने पर आमादा होगा और उसको अपनाने में सहूलत होगी। मानो कि रसूलुल्लाह स0अ0 के नमूने को अपनाने का बेहतरीन ज़रिया अल्लाह के ज़िक्र की कसरत है। जितनादिल में अल्लाह का ध्यान पैदा होगा, उतना छोटी–छोटी बातों में भी रसूलुल्लाह स0अ0 की इत्तेबा करने और रसूल के नमूने पर चलने का जज़्बा पैदा होगा, फ़रमा दिया गयाः "यक़ीनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह स0अ0 में बेहतरीन नमूना मौजूद है उसके लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो और उसने अल्लाह को बहुत याद किया हो।" (एहज़ाबः 21)

सूरह फ़ातिहा जो कुरआन मजीद का मुकद्दमा है, बार–बार पढ़ी जाने वाली सूरत है। और जिसकी बलाग़त और बयान की कूवत के आगे सर झुक गये। इसका समापन जिन गूढ़ शब्दों के साथ हुआ है उससे पूरी जीवन व्यवस्था व उसके आधारभूत नियम सामने आ जाते हैं। और ये वास्तविकता खुल जाती है कि कुरआन मजीद पर अमल तब ही संभव है जब अल्लाह और उसके बन्दों का रास्ता अपनाया जाए, जिन पर अल्लाह का ईनाम हुआ। और ज़ाहिर है कि जिन पर ईनाम किया गया उनमें सबसे ऊपर अम्बिया हैं और उनके इमाम नबी करीम स0अ0 हैं। मानों कि सूरह फ़ातिहा में ये सबक़ दे दिया गया कि कुरआन मजीद के संबंध और उसमें इल्म व अमल की गहराइयों तक पहुंचने का सिरा जहां से हाथ आता है वह आलिमे इन्सानियत क्या तमाम आलिमों के सरदार व रहनुमा की रहनुमाई के बग़ैर संभव नहीं, इसलिए ये दुआ सिखा दी गयी किः "उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने ईनाम किया।" कुरआन और साहबे कुरआन से जब तक संबंध एक प्रकार के न हों, कुरआन की हक़ीक़त का नसीब होना संभव नहीं। और इस्लाम के पूरे इतिहास में वही लोग सीधी राह से हटे हैं जिन्होंने इस रिश्ते को नहीं समझा, और अपनी गाड़ी उस पटरी पर नहीं चलायी जो मंज़िल तक पहुंचने और हक़ीक़त हासिल करने के लिए अल्लाह के आख़िरी रसूल स0अ0 ने आख़िरी वही की समझ के लिए तय फ़रमा दी और उम्मत के लिए वही रास्ता तय कर दिया। .....(शेष पेज 8 पर)

अज़ान की शरई हैसियत
अज़ान का मतलब और उसकी फ़ज़ीलत

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अज़ान का अर्थः अज़ान का शाब्दिक अर्थ "ऐलाम" यानि सूचित करने और ख़बर देने के हैं और शरीअत में ख़ास शब्दों के द्वारा ख़ास अन्दाज़ में नमाज़ की सूचना देने को कहते हैं।

अज़ान को बहुत से फ़ुक़्हा (इस्लामी शरीअत के विद्वान) ने पांच वक़्त के फ़राएज़ और जुमा के लिए वाजिब क़रार दिया है। अक्सर ने उसके बारे में ये फ़रमाया कि अज़ान सुन्नत–ए–मुअक्क़दा और वाजिब के क़रीब–क़रीब है। यहां तक कि इमाम मुहम्मद रह0 फ़रमाते हैं कि अगर किसी शहर के लोग अज़ान छोड़ने पर सहमत होकर अज़ान छोड़ दें तो इमाम को उनसे जंग करनी चाहिए इसलिए कि अज़ान इस्लाम की पहचान है। (शामीः 283/1)

अज़ान के एहकामः अज़ान की शुरूआत सन् 1 हिजरी से हुई। इससे पहले बुख़ारी, मुस्लिम व दूसरी हदीस की किताबों में निम्नलिखित हदीस के अनुसार सहाबा किराम रज़ि0 वक़्त का अन्दाज़ा लगाकर मस्जिद में एकत्र हो जाते थे, जब आप स0अ0 को अन्दाज़ा हो जाता था कि सब लोग आ गये हैं तो नमाज़ शुरू फ़रमा देते थे। लेकिन ज़ाहिर बात है कि उनको परेशानी का सामना करना पड़ता था। अतः एक दिन आप स0अ0 की मौजूदगी में उनके बीच इस मसले पर बातचीत हुई और इस दुश्वारी का हल खोजने पर विचार हुआ। कुछ सहाबा किराम रज़ि0 ने फ़रमाया कि नसारा की तरह नाकूस अपना लिया जाए यानि छोटी लकड़ी से बड़ी लकड़ी पर चोट लगायी जाए ताकि उसकी आवाज़ सुनकर सब लोग एकत्र हो जाएं। लेकिन उसमें नसारा की नक़ल थी। इसलिए उसको पसंद नहीं किया गया। कई लोगों ने कहा कि उस वक़्त आग जला दी जाए, सब लोग इससे समझ जाएं कि नमाज़ का वक्त हो गया है। लेकिन इसमें मजूसियों की नक़ल का शुब्हा था। कई ने राय दी कि नमाज़ के वक़्त झन्डा गाड़ दिया, सब उसको देखकर मस्जिद आ जाया करें। हज़रत उमर रज़ि0 ने राय दी कि ऐसा क्यों न कर लिया जाए कि नमाज़ के वक़्त एक शख़्स बाज़ार और आबादी में चला जाए और नमाज़ की आवाज़ लगाए। आप स0अ0 को ये राय पसंद आयी और आप स0अ0 ने हज़रत बिलाल रज़ि0 को इसकी ज़िम्मेदारी सौंपते हुए फ़रमायाः बिलाल! जाओ, और नमाज़ का ऐलान कर आओ। (बुख़ारी, मुस्लिम)

रिवायात के अनुसार ये ऐलान सिर्फ़ उन शब्दों पर आधारित होता था (नमाज़ जमा कर रही है यानि नमाज़ का वक़्त हो रहा है)

फिर अबूदाऊद व तिरमिज़ी व इब्ने माजा वग़ैरह की रिवायत के मुताबिक़ एक सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि0 ने ख़्वाब देखा कि एक शख़्स अपने हाथ में नाकूस उठाए हुए हैं तो उनसे पूछा, बन्दे ख़ुद! नाकूस बेचोगे?उसने कहा, इसका क्या करोगे? फ़रमाया, इससे नमाज़ के लिए बुलाएंगे। उस शख़्स ने कहा, उससे भी बेहतर चीज़ न बता दूं?कहा, ज़रूर बताइए, उस शख़्स ने जवाब में अज़ान के वो सारे कलिमात बता दिए जो अज़ान में कहे जाते हैं। फिर अक़ामत के कलिमात भी बताए। हज़रत अब्दुल्लाह फ़रमाते है कि सुबह मैं आप स0अ0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप स0अ0 से अपना ख़्वाब बयान किया तो आप स0अ0 ने फ़रमाया कि इंशाअल्लाह ये सच्चा ख़्वाब है, तुम बिलाल के साथ खड़े हो जाओ और उनको ये कलिमात सिखा दो जो तुमने ख़्वाब में देखे हैं। बिलाल उसी तरह अज़ान दें। इसलिए कि बिलाल तुमसे ज़्यादा बुलन्द या अच्छी आवाज़ वाले हैं। फ़रमाते हैं इसीलिए मैं हज़रत बिलाल के साथ खड़ा होगया और उनको सिखलाने लगा और वो उसी के मुताबिक़ अज़ान देने लगे। हज़रत उमर रज़ि0 ने अपने घर से अज़ान सुनी तो वे अपनी चादर घसीटते हुए यानि तेज़ी से निकले और फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, उन्हीं की तरह मैंने भी ख्वाब देखा था, नबी करीम

स0अ0 ने फ़रमाया, तब तो अल्लाह का और शुक्र व एहसान है।

अज़ान के कलिमों को अर्थः अज़ान में कहे जाने वाले शब्द कई अहम इस्लामी विश्वासों पर आधारित हैंः "अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर" दो सांस में चार बार कहा जाता है। जिसमें अल्लाह की बड़ाई का इज़हार करके उसके वजूद और कमाल का इक़रार किया जाता है। फिर "अश्हदु अन ला इलाहा इल्लल्लाह" दो बार दो सांस में कह कर तौहीद का असबात करके शिर्क की काट की जाती है। फिर "अश्हदु अन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" दो बार दो सांस में कह कर आप स0अ0 की रिसालत का इक़रार किया जाता है। फिर दो बार दो सांस में "हय्या अलस्सलाह" कह कर सबसे अहम इबादत नमाज़ के लिए बुलाया जाता है। फिर दो बार दो सांसों में "हय्या अललफ़लाह" कह कर फ़लाह की तरफ़ बुलाया जाता है। फलाह के माने स्थायी बक़ा और कामयाबी के हैं। इसमें आख़िरत के इस्लामी अक़ीदे की तरफ़ भी इशारा है। फिर एक सांस में दो बार "अल्लाहु अकबर" कह कर अल्लाह की बड़ाई के इक़रार को अहमियत की वजह से दुहराया जाता है। फिर आख़िर में "ला इलाहा इल्लल्लाह" एक बार कह कर दोबारा तौहीद का इसबात और शिर्क की काट की जाती है।

अज़ान देने की फ़ज़ीलतः अज़ान और मोअज़्ज़िन (अज़ान देने वाला) से संबंधित बहुत सी हदीसें आयी हैं। कुछ हदीसें निम्नलिखित हैंः

1– हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः अगर लोग अज़ान और पहली सफ़ के सवाब को जान जाएं तो फिर चुनाव के बग़ैर इसका मौक़ा न पाएं, तो वो ज़रूर से ज़रूर इसके लिए चुनाव करें। (बुख़ारी)

2– हज़रत मुआविया रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः क़यामत के दिन मुअज़्ज़िन लोग सबसे लम्बी गर्दन वाले होंगे। (मुस्लिम, इब्ने माजा, मुसनद अहमद)

3– हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते पहली सफ़ पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और मुअज़्ज़िन की आवाज़ जहां तक पहुंचती है, उसके बराबर उसकी मग़फ़िरत कर दी जाती है और उसको सुनने वाली हर सूखी और तर चीज़ उसका तस्दीक़ करती है। और उसके साथ जितने लोग नमाज़ पढ़ते हैं उनके बराबर उसको सवाब मिलता है। (नसई, मुसनद अहमद)

मुअज़्ज़िन कैसा होना चाहिएः बेहतर ये है कि मुअज़्ज़िन किसी नेक, सालेह, दीनदार व्यक्ति को बनाया जाए। जो नमाज़ के वक़्त की जानकारी रखता हो और परहेज़गार हो। लोग उसका एहतराम करते हों और ज़्यादा बेहतर ये है कि ऐसे शख़्स को मुअज़्ज़िन बनाया जाए जो बग़ैर तनख़्वाह सिर्फ़ तनख़्वाह की उम्मीद में अज़ान देता हो। (हिन्दियाः 53/1)

इसलिए कि हज़रत अबूहुरैरह रज़ि0 फ़रमाते हैं, नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः इमाम ज़ामिन होता है और मुअज़्ज़िन अमीन होता है, या अल्लाह! इमामों को हिदायत की राह की रहनुमाई फ़रमा दीजिए और मुअज़्ज़िनों की मग़फ़िरत फ़रमा दीजिए। (बैहिक़ी)

एक दूसरी हदीस में आप स0अ0 ने फ़रमायाः मुअज़्ज़िन ऐसे शख़्स को बनाना जो अज़ान की उजरत न लेता हो, और फ़रमायाः मुअज़्ज़िन ऐसा बनाओ जो तुम में सब से अफ़ज़ल हो। (बैहिक़ी)

ये भी अफ़ज़ल है कि मुअज़्ज़िन की आवाज़ बुलन्द और ख़ूबसूरत हो। इसलिए कि पीछे हदीस गुज़र चुकी है कि जब अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि0 ने ख़्वाब देखा तो आप स0अ0 ने फ़रमायाः ये कलिमे बिलाल को सिखा दो, और उसकी वजह ये बयान फ़रमायी कि कि उनकी आवाज़ तुम्हारी आवाज़ से बुलन्द है। दूसरी अनुवाद ये हो सकता है कि उनकी आवाज तुम्हारी आवाज से ज़्यादा दिलकश है। लिहाज़ा दोनो कामों का ख़्याल रखना चाहिए।

इस बात से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि आजकल जिस तरह के मुअज़्ज़िन मुकर्रर किए जाते हैं, ये सही नहीं है। ये बहुत बड़ा ओहदा है और बड़े शर्फ़ की चीज़ है। लिहाज़ा ऐसे लोगों को मुअज़्ज़िन बनाना जिनके लिए दिल में कम सम्मान हो या जिनसे सफ़ाई सुथराई का काम लिया जाता हो, जो कभी–कभी अज़ान कहने में साफ़ ग़लतियां कर देते हों, किसी भी सूरत में सही नहीं है। ख़ास तौर से इसका बहुत ख़्याल रखा जाए कि अज़ान में ग़लती न हो, अगर ऐसा है तो पूरी कोशिश करके इस ग़लती का सुधार कराया जाए और जब तक ग़लती ख़त्म न हो जाए, दूसरे से अज़ान दिलवायी जाए।

अज़ान का जवाब देनाः जब मोअज़्ज़िन अज़ान दे रहा

हो तो सुनने वालों के लिए उसका जवाब देना बड़े अज्र व सवाब की बात है। फ़िक़्ही तौर पर बहुत से फ़ुक़्हा ने जवाब देने को वाजिब क़रार दिया है लेकिन सही क़ौल के मुताबिक़ वाजिब ये है कि मुअज़्ज़िन जिस इबादत के लिए आवाज़ दे रहा है, अमली तौर उसकी तरफ़ क़दम बढ़ाए और मस्जिद जाए। जहां तक ज़बान से जवाब देने का संबंध है तो ये मुस्तहब है। (शामीः 1/291–292)

हदीसों में अज़ान का जवाब देने की बड़ी ताकीद भी आयी हैं। और इसके अज्र व सवाब का भी ज़िक्र किया गया है। इसीलिए हज़रत अबूसईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः जब तुम लोग अज़ान सुनो तो मुअज़्ज़िन जो कुछ कह रहा है उसी की तरह तुम भी कहो। (बुख़ारी, मुस्लिम)

इस हदीस से मालूम होता है कि "हय्या अलस्सलाह" और "हय्या अललफ़लाह" के जवाब में भी यही कलिमे कहे जाएंगे। लेकिन बहुत सी हदीसो में साफ़ तौर पर ज़िक्र किया गया है कि उन दोनों कलिमों के जवाब में "ला हौला वला कूव्वता इल्ला बिल्लाह" कहा जाए। हज़रत उमर रज़ि0 की रिवायत में आया है कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः "जब मुअज़्ज़िन "अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर" कहे, तो तुम में से कोई जवाब में "अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर" कहे, फिर जब वो "अश्हदु अन ला इलाहा इल्लल्लाह" कहे तो वो भी "अश्हदु अन ला इलाहा इल्लल्लाह" कहे, फिर जब वो "अश्हदु अन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" कहे तो वो भी "अश्हदु अन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" कहे, फिर जब वो "हय्या अलस्सलाह" कहे तो "ला हौला वला कूव्वता इल्ला बिल्लाह" कहे, फिर जब वो "हय्या अललफ़लाह" कहे तो वो "ला हौला वला कूव्वता इल्ला बिल्लाह" फिर जब वो "अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर" तो वो भी "अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर" कहे, फिर जब वो "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहे तो वो भी "ला इलाहा इल्लल्लाह" कहे। (और ये सभी कलिमे) वो अपने दिल से कहे तो जन्नत में दाख़िल हो जाएगा। (मुस्लिम, अबूदाऊद)

फिर जब "हय्या अलस्सलाह" और "हय्या अललफ़लाह" के ज़रिए मुअज़्ज़िन लोगों को मस्जिद में आने की दावत देता है, उसके जवाब में ख़ुद सुनने वाले का ये कहना ज़्यादा सही मालूम होता है कि किसी चीज़ पर कुदरत और ताक़त अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर नहीं हो सकती है। फिर भी उलमा ने लिखा है कि ज़्यादा बेहतर ये है कि पहले "हय्या अलस्सलाह" और "हय्या अललफ़लाह" कह दे फिर "ला हौला वला कूव्वता इल्ला बिल्लाह" कहे ताकि दोनों हदीसों पर अमल हो जाए। (शामीः 1/293)

इसी तरह फ़ज्र की अज़ान का जवाब देते वक़्त "अस्सलात ख़ैरुम मिनन्नौम" के जवाब में "सदक़ता व बरकता" कहने की बात फ़ुक़्हा ने लिखी है। (शामीः 1/293)

इसलिए कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि0 रिवायत करते हैं कि उन्होंने आप स0अ0 को ये फ़रमाते हुए सुना कि "जब तुम मुअज़्ज़िन को अज़ान देते हुए सुनो तो जो वो कह रहा हो वही कलिमात कहो, फिर मुझ पर दरूद भेजो, इसलिए कि जो मुझ पर एक बार दरूद भेजता है, अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है, फिर मेरे लिए वसीले की दुआ मांगो, इसलिए कि वसीला जन्नत में एक मक़ाम का नाम है, वो अल्लाह के सिर्फ़ बन्दे की शान के अनुसार है, तो जो मेरे लिए वसीले की दुआ मांगेगा, उसके लिए मेरी शफ़ाअत का हक़ हासिल हो जाएगा। (मुस्लिम)

शेष : सीरत–ए–नबवी

उम्मत की ज़िम्मेदारी है कि वह दीन की हक़ीक़त तक पहुंचने के लिए वही रास्ता अपनाए और उसी रास्ते पर चलती रहे, जो रास्ता रसूलुल्लाह स0अ0 ने तय फ़रमाया, उस पर चल कर दिखाया, सहाबा रज़ि0 ने उसको अपनाया और दुनिया को उस पर चलाया। और फिर ताबईन, तबअ ताबईन, मुजद्दिदीन और मुसलहीन और उलमा व अइम्मा का वही रास्ता रहा। और क़यामत तक यही रास्ता उम्मत की नजात के लिए और दुनिया को सही रुख़ देने के लिए खुला हुआ है। नबूवत के चिराग़ से जो चिराग़ जले, उन चिराग़ों से चिराग़ा हों और क़यामत तक उन्हीं चिराग़ों में वो रोशनी है जो रास्ता बताती रहेगी। और उम्मत उसी पर चलती रहेगी। इसी रास्ते के बारे में आप स0अ0 ने फ़रमाया था ये वो रास्ता है जिस पर मैं हूं और मेरे सहाबा हैं। यही नजात का रास्ता है। इस रास्ते से हटकर अगर कोई अपना रास्ता बनाएगा वो ख़ुद भी हलाकत के ग़ार में गिरेगा और जो भी उसकी बात मानेगा वो भी तबाह होगा।

हिन्दुत्व की यलग़ार
कहाँ से कहाँ तक

मौलाना अब्दुल हमीद नोमानी

वैचारिक व व्यवहारिक दृष्टिकोण के आधार की समस्या बहुत महत्वपूर्ण होती है। यदि सत्यता से जुड़ाव की बात हो तो उसे झूठ से समाप्त नहीं किया जा सकता है। नाथू राम गोडसे ने गांधी जी की हत्या इसलिए की थी क्योंकि वह व्यवहारिक दृष्टिकोण के स्तर पर युद्ध हार चुका था। गांधी जी जंग के मैदान में नहीं थे कि उनको शहीद कर देना बहादुरी में गिना जाए। एक निहत्थे अहिंसा के पुजारी व ध्वजवाहक को पैर छूने का नाटक करते हुए उसकी हत्या कर देना बुज़दिली है, न कि बहादुरी। इसी कारण जो लोग गोडसे का मंदिर बनाने का अधिकार इसलिए प्राप्त करना चाहते हैं कि वह हमारे लिए पूज्यनीय व सम्मानीय है तो वे स्वयं को बे नक़ाब कर रहे हैं एवं अपनी वास्तविकता बता रहे हैं। ऐसे लोगों को उनकी बनायी हुई हैसियत से अधिक और अलग स्थान देने का मतलब साफ़ है कि झूठ की ज़मीन पर खुद को खड़ा करने का असफल प्रयास किया जा रहा है। अगर अपनी कमज़ोरियों को दूर करने के बजाए, केवल नकारात्मक आधार पर कार्य किया जाएगा, तो उसके बेहतर परिणाम कभी नहीं निकल सकते हैं। हिन्दु महासभा और संघ परिवार के लोग लम्बे अर्से से यही कुछ कर रहे हैं। वैसे ये समझना सीधे तौर पर सही नहीं होगा कि इस्लाम और मुसलमानों के दुश्मन तत्व केवल आर. एस.एस में हैं, बल्कि इससे बाहर भी ऐसे लोग व संस्थाएं हैं जिनके जीवन के अस्तित्व का दारोमदार अल्पसंख्यकों विशेषतयः मुसलमानों का विरोध एवं दुश्मनी पर आधारित है। यदि आप इतिहास और ब्राहम्णवादी व्यवस्था पर आधारित समाज का थोड़ा अध्ययन करें तो इस बात को आसानी से समझा जा सकता है कि हिन्दुत्व के ब्राहम्णवादी तत्वों की इस्लाम और इस्लाम के संदेष्टा मुहम्मद स0अ0 से नफ़रत क्यों है? आप सोच सकते हैं कि यदि इस्लाम और मुसलमान का भारत में अस्तित्व न होता तो दलितो, आदीवासियों व मेहतन करने वालों की देश में कितनी दयनीय स्थिति होती। ब्राहम्णवादी, इस्लाम को इस बात का ज़िम्मेदार मानते हैं कि उसने हमारी पालकी ढोने वालों को हमसे छीन लिया। इस बात से नाराज़ होकर एक ओर वे ये चाहते हैं कि मुसलमानो से उन पालकी ढोने वालों की जगह को भरा जाए, दूसरी ओर यह जताने का प्रयास किया जा रहा है कि यदि लोग इस्लाम को छोड़कर अपना मनमाना जीवन व्यतीत करने लगेंगे तो मानवीय समाज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। पिछले दिनों हिन्दु राइटर्स फ़ोरम ने एक किताब प्रकाशित की है, जिसका नाम है "भारतीय महापुरूषों की दृष्टि में इस्लाम" ये किताब बड़े स्तर पर प्रकाशित करके अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। 57 पन्नों की किताब में बाबा गुरूनानक, राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, डाक्टर रवीन्द्र नाथ टैगोर जैसे 17 व्यक्तियों के विचारों को इस्लाम और इस्लामी संदेष्टा स0अ0 से संबंधित प्रस्तुत करते हुए ये विचार दिया गया है कि इस्लाम से, धार्मिक समाज एवं मानवीय संसार पर बड़ी तबाही आयी है। विवेकानन्द के हवाले से बताया गया है कि (अल्लाह मआफ़ करे) मुहम्मद स0अ0 अल्लाह के मार्गदर्शन को पूरी तरह समझ नही सके और न ही अपने कामों और तरीक़ो को, जिसके परिणाम में लाखों लोग मारे गये और देश के देश तबाह व बर्बाद हो गये। इसी बात को संघ के 8/मार्च/2015 के हिन्दी समाचार पत्र पाञजन्य में शंकर शरण ने अपने लेख में प्रस्तुत किया है। लेखन संस्था ने भी इसका भरपूर समर्थन किया है। लेखक ने कई बार पाञजन्य के सम्पादक से यह जानने का प्रयास किया कि वे दलील और उद्देश्य से ऐसा लेख लिख रहे हैं। और आप लोगों ने ईमानदारी से, गंभीरता के साथ मुहम्मद स0अ0 की जीवनी का एवं इस्लाम का किस हद तक अध्ययन किया है?लेकिन उनके सेक्रेटरी न तो मोबाइल नम्बर दिया और न ही सम्पादक महोदय से बात करायी।

इस्लाम एवं इस्लामी संदेष्टा से संबंधित भड़काऊ विचार एवं चर्चे क्यों किए जाते हैं। इसके दो उद्देश्य हैं। एक तो ये कि घरवापसी का रास्ता आसान किया जाए, दूसरा ये कि हिन्दु बहुसंख्यको के समाज में ब्राहम्णवादी विचारधारा एवं दृष्टिकोण को लेकर जो सवाल हो रहे हैं, उनसे जनता विशेषतयः नवजवानों व दलितों का ध्यान हटा दिया जाए। कुछ दिनों पहले लेखक के पास पटना के स्वामी शशि कान्त पधारे थे। पाञजन्य एवं पहले प्रकाशित हुए कुछ लेखों के स्त्रोत से कहा कि इस्लाम इस ब्राहम्णवाद की नफ़रत का कारण बहुत साफ़ है कि

ब्राहम्णवाद का सही अर्थों में सामना व समापन केवल इस्लाम ही कर सकता है। यदि इस्लाम का उदय और मुहम्मद स0अ0 का अवतरण न होता और भारत इस्लाम और अंग्रेज़ों के अधीन न आता तो दलितों, कमज़ोरो और मेहतन करने वालों के लिये उन्नति, शिक्षा और उन पर ध्यान दिए जाने का मार्ग कभी भी न खुलता। इस बात को आप महात्मा ज्योतिबा फुले, बाबा भीमराव अम्बेडकर और स्वामी नाइकर प्रयार के लेखों, भाषणों एवं आन्दोलनों के अध्ययन से भलिभांति समझ सकते हैं। स्वामी शशि कान्त ने महात्मा ज्योतिबा फुले की उस नात की ओर ध्यान दिलाया जो उन्होंने मुहम्मद स0अ0 के मानवता पर उपकारों की चर्चा करते हुए कही है। उन्होंने ये भी कहा कि काबा शरीफ़ में रखे काले पत्थर को (हजर–ए–असवद) को शिवलिंग और शिव को पहला मनुष्य और संदेष्टा होने की बात अस्ल सवाल से भटकाने का प्रयास है, जिस बात को हिन्दुत्ववादी स्वयं नहीं मानते हैं तो उसके समर्थन का क्या अर्थ हो सकता है?

स्वामी जी की बात में बहुत दम है यद्यपि उन्हें अफ़सोस और शिकायत है कि दलित मार्गदर्शकों ने भी महात्मा फुले, पैरीयार एवं बाबा साहब इत्यादि को समाज के सामने दृढ़ता से प्रस्तुत करना छोड़ दिया है और मुसलमानों ने भी उनको जानने व समझने का अधिक प्रयास नहीं किया। हमें इसको स्वीकार करना चाहिए कि मुसलमानों को जितना कुछ करना चाहिए, उतना नहीं किया। इसका परिणाम है कि संघ का सिद्धान्त एवं ब्राहम्णवाद, रह–रह कर समाज पर हावी हो जाता है। वह जिस होशियारी व समझदारी से पैंतरे बदलते हुए आगे बढ़ता और पीछे हटता है, उस पर नज़र रखते हुए नहीं चला जाता है। उसने बहुसंख्यक समाज को धार्मिक एवं सभ्यता की पहचानों से जोड़कर अपने साथ रखने के जो उपाय निकाले हैं, उनसे अनुमान लगाया जा सकता है कि राजनीति व समाज पर हावी रहने के लिए किस सुन्दरता व महारत से खेल खेला जा रहा है।

निर्धनों, लितों एवं आदीवासियों को भी अपने साथ रखने के लिए अतीत से ऐसे व्यक्तित्वों को खोज कर सामने लाया जा रहा है, जिनके हवाल से ये कहा जा सके कि उन्होंने हिन्दु धर्म व समाज की रिवायत को बचाने के लिए किस प्रकार मुस्लिम आक्रमणकारियों का सामना किया था। एक ओर बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर को इस्लाम और मुस्लिम विरोधियों के तौर पर प्रस्तुत करके उनकी प्रशंसा की जाती है। दूसरी ओर ब्राहम्णवादी रिवायतें और धर्म से संबंधित उनकी खोजो को ओछा बनाने के भरपूर प्रयास किए जाते हैं। और दिलचस्प बात तो ये है कि दोनों प्रकार के विपरीत लेख संघ के एक ही प्रकाशन सुरूची प्रकाशन की प्रस्तुति, डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर, लेखक एस. के. अग्रवाल और मनुस्मृति और डॉक्टर अम्बेडकर लेखक डॉक्टर कृष्ण वल्लभ पॉलीवाल, जैसी किताबें देखी जा सकती हैं। बड़ी हैरत है कि ऐसे विपरीत रवैये पर उदित राज, राम अठावले, राम विलास पासवान जैसे दलित मार्गदर्शक ख़ामोश हैं। पता नहीं कि उनको इसकी ख़बर भी है कि नहीं। संघ का लड़ाई लड़ने का तरीक़ा कई क्षेत्रों से जंग छेड़ देने का होता है। लेकिन हर युद्ध का उद्देश्य ब्राहम्णवाद और हिन्दुत्व को ताक़त पहुंचाना होता है। एक ओर गुरू गोलवरकर समेत दूसरे संघ वाले बाबा साहब की महानता की बात करते हैं, तो दूसरी ओर गुरूजी ही अपनी किताब बन्च आफ़ थाट्स (Bounch of thoughts) में उस बुद्धमत के विरुद्ध जिसको उन्होंने स्वीकार किया था, लिखते हैं कि उसने वरुण व्यवस्था तोड़कर हिन्दु समाज को कमज़ोर और इस्लाम इत्यादि के प्रचार का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इस पर डॉक्टर नित्यानंद अपनी किताब "मुस्लिम तुष्टिकरण" में ये विचार रखते हैं कि इस्लाम अपनी तंगी के कारण कभी धर्मनिरपेक्ष नहीं हो सकता है। जहां भी इस्लामी शासन है और मुसलमान बहुसंख्यक हैं, वहां या तो अल्पसंख्यकों का निकलना पड़ा है, या वे दूसरे दर्जे के नागरिक बन कर रह गये हैं। वहां वे जीवन के क़ौमी धारे में कभी सम्मिलित नहीं हुए। क्या इस तंग साम्प्रदायिकता का मुआज़ना हिन्दुओं वृहद वैश्विक भाईचारे के दृष्टिकोण से किया जा सकता है? डॉक्टर नित्यानन्द इस चर्चा से पहले मौलाना मौदूदी के अप्रैल 1939ई0 के एक लेख "इस्लाम और राष्ट्रवाद" (Islam and Nationalism) का हवाला देते हैं, "जहां राष्ट्रवाद है, वहां इस्लाम कभी फल–फूल नहीं सकता, जहां इस्लाम है, वहां राष्ट्रवाद के लिए कोई जगह नहीं है", देखा जा सकता है कि बात को कहां से कहां ले जाकर रखा जाता है। इससे बहुसंख्यकों में किस हद तक भ्रान्तियां व्याप्त हो रही होगी इस बात का आसानी से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। क्या हमारी आम नवैयत की बातों और बयानों से ये ग़लतफ़हमिया ख़त्म होंगी। .....(शेष पेज 12 पर)

पारिवारिक शांति में पतियों की ज़िम्मेदारी

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

पति की ओर से साधारणतयः तीन कारणों से मामलात बिगड़ते हैं। घमन्ड, कंजूसी और बेसब्री। कुरआन करीम ने इन तीनों कमियों से रोका है। कभी–कभी "पति के अधिकार" को लेकर पति का दिमाग़ कुछ ज़्यादा ही ख़राब हो जाता है। और बात–बात पर अपनी बड़ाई जतलाने को वो "ख़ैर का काम" या "दीनी अधिकार" समझता है। ऐसे लोगों का इलाज कुरआन करीम ने यूँ किया हैः "औरतों को प्रचलित तरीक़े के अनुसार वैसे ही अधिकार प्राप्त हैं जैसे मर्द को उन पर प्राप्त हैं, हां मर्द को उन पर एक दर्जे की प्राथमिकता है।" (सूरह बक़राः 228) ये बात ध्यान रहे कि ये श्रेष्ठता भी अल्लाह ने व्यवस्था को ठीक रखने के लिए दी है। औरतों पर अत्याचार के लिए बिल्कुल नहीं दिया हैः "औरतों को कष्ट पहुंचाने के उद्देश्य से रोके न रखो कि उन पर ज़्यादती करने लग जाओ। जो भी ऐसा करेगा वह अपने आप पर ज़ुल्म ढाएगा। अल्लाह की आयतों का मज़ाक न बनाओ (यानि अल्लाह की उन हिदायतों को केवल नसीहत के बातें क़रार देकर नज़रअन्दाज़ करना शुरू कर दो और ये समझो कि हम तो अपनी ज़िद पूरी करके रहेंगे, देखें क्या होता है, ऐसी सूरत में अल्लाह के यहां सख़्त से सख़्त मामले के लिए तैयार रहना) अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद रखो। इसे भी याद रखो कि अल्लाह ने तुम्हारी नसीहत के लिए तुम पर कैसी किताब उतारी और कैसी हिकमत की बातें तुम्हें बतायीं, देखो अल्लाह से डरते रहना ये भी जान रखो कि अल्लाह हर चीज़ का पूरा इल्म रखता है।" (सूरह बक़राः 231)

मर्द के हाकिम होने का विचार कुरआन करीम ने ज़िम्मेदारी के एहसास और हक़ अदा करने के लिए दिया है। ये कोई नशा नहीं है कि जिसके ख़ुमार में आदमी अल्लाह के हुक्मों को नज़रअन्दाज़ करना शुरू कर दे। बल्कि बहुत सी आयतों से तो ये पता चलता है कि मर्द औरता दोनों मिलकर एक इकाई बनते हैं। एक जगह इरशाद हैः "वो औरतों तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो।" (सूरह बक़राः 187) बहुत ही गूढ़ वाक्य है जिसमें दोनों को एक प्रकार का घोषित किया गया है और पति–पत्नी को एक–दूसरे से यूँ जोड़कर दिखाया गया है कि इससे आसान शब्दों में इससे स्पष्ट बात संभव ही नहीं। लिबास से इनसान शर्म व हया को सुरक्षित करता है। इसी प्रकार पति–पत्नी में हर एक दूसरे के लिए इज़्ज़त व इफ़्फ़त का कारण होता है। लिबास अन्दरूनी कमियों को ढांक देता है। ये आयतें पति–पत्नी के लिए एक ख़ामोश पैग़ाम देती हैं कि वे एक दूसरे के राज़दार हैं कि ये भी पारिवारिक जीवन का एक हुस्न हैं। लिबास ज़ीनत के लिए भी पहना जाता है। अतः पति–पत्नी एक दूसरे के लिए ज़ीनत का कारण हों। पति पत्नी का सरताज हो और पत्नी पति के लिए दिन का सुकून हो। लिबास सर्दी–गर्मी से बचाव का साधन बनता है अतः पति–पत्नी की व्यवहारिक ज़िम्मेदारी है कि वे एक दूसरे के व्यक्तित्व का बवाच करें। ताना, ग़ीबत व ऐब निकालना किसी के साथ जायज़ नहीं।

विशेषतयः पति–पत्नी के अधिकारों में तो से बहुत तीव्रता से असर करने वाला ज़हर है। यहां मामला दिलदारी और हौसला अफ़ज़ाई का हो। लिबास इन्सान से इतना क़रीब रहता है कि मानों बदन का हिस्सा बन जाता है। क्या इस मुबारक आयत में यह पैग़ाम नहीं कि दोनों आपस में ऐसा ज़हनी व दिली लगाव रखें कि दो जिस्म एक जान बन जाएं।

रसूलुल्लाह स0अ0 ने इसे भी अज्र व सवाब का कारण बताया कि कोई मुहब्बत से अपनी बीवी के मुंह में लुक़्मा खिलाए, बल्कि उससे भी आगे की बात ये बतायी कि हलाल तरीक़े से संबंध स्थापित करना भी अज्र व सवाब है कि इसके द्वारा मनुष्य हराम काम करने से बचा रहता है। इसी तरह लिबास इन्सान पहनते हैं। मानो लिबास इन्सानियत की पहचान और हैवानियत से श्रेष्ठ होने का आधार है। इस मुबारक आयत ने यह भी संदेश दिया है कि शादी शुदा जीवन ही वास्तव में सही इनसानियत है। निकाह के पवित्र बन्धन से आज़ाद होकर यदि कोई पति या पत्नी संबंध स्थापित करते हैं तो वह निरा हैवान है। केवल हैवान और कुछ नहीं। बहरहाल इस आयत ने दोनों को क़रीब–क़रीब एक क़रार दिया है। एक जगह मर्दों व औरतों को संबोधित करते हुए यूं कहा गया हैः "तुम सब आपस में एक दूसरे

से जुड़े हुए हो।" (सूरह निसाः 25) यानि बिल्कुल एक ही हो। जब इस अन्दाज़ से मर्द व औरत को एक बताया जा रहा है तो फिर मर्द को क्या अधिकार पहुंचता है कि मर्द के हाकिम होने का हवाला देकर घमन्ड करे और औरतों को कमतर समझे। ये शरीअत के अनुसार नाजायज़ है।

दूसरी चीज़ कंजूसी है जिसके कारण से पारिवारिक शांति भंग होती है। जिस प्रकार पति के लिये यह ठीक नहीं कि वह अपनी चादर से ज़्यादा पांव फैलाए और मांग–मांग कर या क़र्ज़ों पर क़र्ज़े लेकर बनावटी खुशहाली की नुमाइश करे और जीवन को बोझिल बना दे। इसी प्रकार ये भी ग़लत है कि अपनी माली वुसअत को कंजूसी की जंजीरों में जकड़ कर घरवालों के हक़ को न अदा करे। कुरआन करीम ने इस बारे में बहुत ही साफ़ हिदायत दी हैः "वुसअत वाला अपनी वुसअत के अनुसार ख़र्च करे और जिसका रिज़्क़ महदूद रखा गया है वह अल्लाह ने उसे जितना दिया है, उसमें से ख़र्च करे, अल्लाह किसी इन्सानी जान को उतना ही पाबन्दी करता है जितना उसने उसे दे रखा है, तंगी के बाद अल्लाह तआला ज़रूर खुशहाली भी देगा।" (सूरह तलाकः 8)

तीसरी चीज़ बेसब्री है। वर्तमान तेज़ रफ़्तार जीवन में इस बीमारी ने एक महामारी की शक्ल ले ली है, बल्कि इसे इन्सान का गुण समझा जाता है। इस बेसब्री ने न जाने कितने हंसते खेलते गुलशन उजाड़ दिए हैं। ज़रा सी तबियत पर कोई चीज़ नागवार गुज़री झट से तलाक़ दे दी या बीवी ज़रा कम सूरत मिली, बस दुनिया तारीक हो गयी। अब दिन रात उसके लिए परेशानियां खड़ी की जा रही हैं। मामला फ़हमी और अच्छे दिनों के इन्तिज़ार की सिफ़त ही अनका होती जा रही है। सामाजिक जीवन की तरह पारिवारिक जीवन में भी सब्र का कोई बदल नहीं। बल्कि ये कहा जाए तो ग़लत न होगा कि सब्र ही अस्ल में शुक्र की बुनियाद हैः "तो बिला शुब्हा तंगी के साथ आसानी जुड़ी हुई है।" (सूरह बक़राः 5–6) "हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और वह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो।" (सूरह बक़रहः 216) इसी तरह "अगर तुम उनको नापसंद करो तो हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और अल्लाह ने उसी में बहुत कुछ ख़ैर रख दिया हो।" (सूरह निसाः 19) इस तरह की आयतों में अस्ल में सब्र को बुनियाद बनाकर उसी पर शुक्र की इमारतें खड़ी की गयीं हैं। इम्तिहान और इनआम एक दूसरे का हिस्सा हैं। इम्तिहान पहले होता है और इनआम बाद में दिया जाता है। रसूलुल्लाह स0.अ0 का इरशाद हैः (किसी को सब्र से बढ़कर बेहतर और वसीअ तर तोहफ़ा नही दिया गया)

शेष : हिन्दुत्व की यलग़ार – कहाँ से कहाँ तक

यदि डॉक्टर नित्यानन्द मुसलमानों के हितैषी होते तो वे मौलाना आज़ाद रह0 व मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह0 की भी चर्चा कर सकते थे। वे राष्ट्रवाद और इस्लाम के मध्य विपरीतता को नहीं मानते थे। और ये कि मौलाना मौदूदी और अल्लामा इक़बाल किसी भी प्रकार राष्ट्रवाद के इतने विरोधी थे, जिस क़ौमियत व राष्ट्र से अल्लाह के प्राणियों और मानवीय समाज, नफ़रत के आधार पर, बंटवारा हो जाए तो इसके विरोधी तो डाक्टर रवीन्द्र नाथ टैगोर, लेकिन इस प्रकार की स्पष्टता संघ के वारदारत के तरीक़े और मक़सद के ख़िलाफ़ है। इसके लोग आम तौर पर बीच से बात आरम्भ करके ग़लतफ़हमियां फैलाने का काम करते हैं। फिर मौलाना मौदूदी और मौलाना वहीदुद्दीन ख़ां का हवाला ऐसे देते हैं कि मुसलमान कटघरे में खड़ा हो जाएं और हिन्दुत्ववादी खुले दिल के, दूध के धुले, बिल्कुल मासूम साबित हों, इससे समझा जा सकता है कि किस प्रकार से कार्य करने की आवश्यकता है। ये हैरत की बात है कि बहुत से पढ़ी लिखी समझे जाने वाले लोग भी, शेखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी और मौलाना आज़ाद रह0 के हवाले से क़ौमियत की बात को अज़कारे रफ़ता बताते हैं। हालांकि संघ की विशेष राष्ट्रवाद की बहस के अभी समाप्त होने की कोई संभावना नज़र नही आती और इसका तोड़ और जवाब देश से मुश्तरका संबधों की दृष्टि में वह राष्ट्रवाद व वतनियत है, जिसको आज़ाद और मदनी रह0 ने प्रस्तुत किया था। उनके नज़रिये के अनुसार हिन्दुस्तान के रहने वाले हिन्दुस्तानी हैं, जबकि संघ की आइडियोलॉजी के अनुसार हिन्दुस्तान में रहने वाले सब के सब हिन्दु हैं।

आज आवश्यकता है कि बात साक्ष्यों व प्रमाणों के साथ की जाए। साधारणतयः की जाने वाली बातों से कोई नतीजा नहीं निकलेगा। संघ का तरीक़ा किसी निश्चित हवाले से बात को कहीं से कहीं ले जाकर ग़लतफ़हमी और नफ़रत फैलाने का काम है। हमें इसको परिदृष्य के साथ स्पष्ट करना होगा इसके बग़ैर बात नहीं बनेगी।

इस्लामी में सफ़ाई सुथराई

अल्लाह तआला ने सफ़ाई सुथराई को मनुष्य की प्रकृति में रखा है। इसीलिये साधारणतयः स्वयं की इच्छानुसार लोग सफ़ाई–सुथराई का ध्यान रखते हैं। माताएं अपने बच्चों को नहलाती–धुलाती हैं ये भी पाकी व साफ़ करने की एक व्यवस्था है। कपड़ों औ बिस्तरों को धोया जाता है, यहां तक कि स्वयं को धोया जाता है सब पवित्रता के ही दृश्य हैं। क्योंकि अल्लाह तआला ने इन्सान के अन्दर अपने को ठीक रखने और साफ़ रखने का तत्व रखा है। चूंकि इस्लाम सम्पूर्ण व मुकम्मल दीन है और अल्लाह तआला ने उसको सम्पूर्ण रूप से शेष रखा है, इसलिये उसने पवित्रता पर अत्यधिक ज़ोर दिया है, जितना दुनिया के किसी दूसरे धर्म में नहीं पाया जाता है। लेकिन इस्लाम ने पवित्रता का वर्गीकरण भी किया है। नम्बर एक पर आरम्भिक स्तर की चीज़ स्वच्छता है उसका भी इस्लाम ने पूरा ध्यान रखा है, और स्वच्छता में वे सारी चीज़ें हैं जिसको घरों की सफ़ाई, आंगन की सफ़ाई, कमरों की सफ़ाई की संज्ञा देते हैं, इसी प्रकार मस्जिदें मैली हो जाती हैं, उनको झाड़ा जाता है, उन पर रंग कराया जाता है, ये सारी चीज़ें स्वच्छता से संबंध रखती हैं। और इसी प्रकार मनुष्य के शरीर में भी स्वच्छता का प्रयोग कराया गया जिसको प्रकृति की संज्ञा दी गयी है कि नाख़ून काटे जाएं, दाढ़ी, मूंछे, बाल और आंखों को भी सही रखा जाए और तेल का भी इस्तेमाल किया जाए, इसके अतिरिक्त शरीर को धोया जाए इत्यादि–इत्यादि। ये सारी चीज़ें आरम्भिक वर्ग में सम्मिलित हैं, जिनको हर आदमी अपने–अपने अन्दाज़ से करता है और जो व्यक्ति ऐसा नही करता तो उसको उसके घर वाले व समाज वाले बुरा समझते हैं। इसीलिये इसको मनुष्य के स्वभाव में भी सम्मिलित किया जाएगा। ये बाह्य सफ़ाई है, जो कि इस्लाम का आरम्भिक आदेश है। इसके बाद सफ़ाई सुथराई का क्षेत्र फैलता चला जाता है, और फिर आस्था की पवित्रता, कर्मों की सफ़ाई की सफ़ाई पर इस्लाम ज़ोर देता है, और उन सारी सफ़ाइयों को ईमान का हिस्सा घोषित करता है।

इस्लाम में जब भी सफ़ाई का शब्द बोला जाता है तो उसका क्षेत्र व्यक्तिगत सफ़ाई से समाज की सफ़ाई तक फैला हुआ नज़र आता है। सुबह का आरम्भ नमाज़ से और नमाज़ से भी पहले वुज़ू को आवश्यक घोषित कर दिया गया है। जिसमें हाथ–पैर और चेहरे से पहले मिस्वाक की नसीहत की जाती है ताकि मुंह की पूरी तरह सफ़ाई और साफ़–सुथरे मुंह के साथ अपने रब की पवित्रता बयान की जाए। इसी तरह रात को आख़िरी नमाज़ रखी गयी है ताकि सोने से पहले भी पूरी तरह सफ़ाई सुथराई का ध्यान रखा जाए। इसी प्रकार नमाज़ जैसी महत्वपूर्ण इबादत के लिये शर्त है कि वा हर प्रकार की नकारात्मक सोच से पाक हो। साल भर में ज़कात की व्यवस्था की गयी है और रोज़े के द्वारा मनुष्य के शरीर एवं आत्मा की अन्तरमन में पैदा होने वाली गन्दगी को साफ़ करने का आदेश दिया गया है। इसके समाज की हर उस चीज़ से घृणा पैदा करायी गयी जिससे समाज का वातावरण दूषित हो। रास्ते में मलमूत्र त्यागने से मना किया गया बल्कि कहा गया कि अपनी इस आवश्यकता के लिये आबादी से जितनी दूर संभव हो जाया करो। खाने व पहनने की वस्तुओं को खुला न रखा जाए, यहां तक कि खाने–पीने की वस्तुओं में फूंका भी न जाए, घरों में रोशनदान बनाए जाएं, और अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाए जाएं, रास्ते से हर प्रकार की हानिकारक वस्तुओं को हटाया जाए। इत्यादि

एक नेक समाज का वजूद उस समय तक संभव नही जब तक कि उसके लोग खुली हुई छिपी हुई दोनों प्रकार की सफ़ाइयों से लैस न हों। घर के साथ मुहल्ले की गलियां भी साफ़ हों, और बाहर से आने वाले को देखकर ये अनुभूति हो कि ये मुसलमानों के मुहल्ले हैं। यहां के घर व आंगन और यहां की गलियां इस बात की गवाह है कि यहां के लोग उस धर्म के मानने वाले हैं जिसने हर प्रकार की सफ़ाई–सुथराई व पवित्रता पर ध्यान दिया है। और जब इस धर्म के मानने वाले मानव समाज में क़दम रखें और लोगों से बातें व मुलाक़ाते हों तो उनके विचार व कर्म और उनकी बातें गवाही दें कि ये उस नबी का नाम लेने वाले हैं जिसने हर क़दम पर सफ़ाई का आदेश दिया है। यहां तक कि नमाज़ जैसी पवित्र इबादत से पहले भी मिस्वाक और वुज़ू के द्वारा स्वयं को पाक करने की हिदायत दी। ताकि पांच बार के इस काम के बाद किसी तरह के बाहिरी और अन्दरूनी गन्दगी की संभावना न रहे। .....(शेष पेज 16 पर)

जन्नती व्यापारी

मुहम्मद अरमुग़ान नदवी

हदीसः हज़रत अबूसईद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः सच्चा, अमानतदार व्यापारी नबियों, सच्चे लोगों और शहीदों के साथ होगा। (तिरमिज़ीः 1225)

फ़ायदाः दीन–ए–इस्लाम में जहां आख़िरत की फ़िक्र की तरफ़ कसरत से ख्याल किया गया है। वहीं दुनिया की ज़िन्दगी को गुज़ारने के लिए साधन अपनाने करने का भी हुक्म दिया गया है। नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद कुरआन का साफ़ हुक्म हैः "फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए तो ज़मीन में फ़ैल जाओ तो और अल्लाह का फ़ज़ल तलाश करो।" इसी तरह दूसरी जगह इन्सान का दुनिया में जो तय हिस्सा है उसके बारे में हुक्म देते हुए फ़रमाया, "और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूलो।" इसीलिए अम्बिया अलै0 के बारे में आता है कि उन्होंने भी आख़िरत की फ़िक्र और अल्लाह की ओर बुलाने के साथ–साथ ज़रूरत के एतबार से दुनिया कमाने के अलग–अलग तरीक़ों को अपनाया।

ये इस्लाम ही की श्रेष्ठता है कि उसने अपने मानने वालों को किसी भी मैदान में अकेला नहीं छोड़ा बल्कि हर पेश आने वाली ज़रूरत के बारे मे पूर रहनुमाई फ़रमायी। चूंकि इन्सानी ज़िन्दगी के अन्दर रिज़्क़ पाने के ज़रियों की भी अहमियत है इसलिए कारोबार को नबियों की सुन्नत और अच्छा काम क़रार दिया गया है और दूसरी हदीसों में अमानतदार व्यापारी के बारे में बहुत सी बशारतें भी सुनायीं गयीं जिनसे अन्दाज़ा किया जा सकता है कि अगर कोई इन्सान उस काम को अच्छी नियत सुन्नत की पैरवी के जज़्बे से अन्जाम दे तो बेशक उसका हश्र नबियों, सच्चे लोगों व शहीदों के साथ होगा।

कारोबार के अन्दर कुछ बुनियादी कामों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए जिनके बारे मे हदीसों में भी अक़्सर ध्यान दिलाया गया है। जैसे – अल्लाह ही को राज़िक़ मानना, नियत को साफ़ रखना, सच बोलना, सदक़े का एहतिमाम करना, फ़िज़ूल बातों से दूर रहना, ग्राहक से मुहब्बत का बर्ताव करना, सामान में जो कमी हो उसको ज़ाहिर कर देना, नाजाएज़ चीज़े को बेचने से बचना, झुकता हुआ तौलना, तराज़ू ठीक रखना, नाप तौल में कमी न करना, बिला ज़रूरत बात–बात पर क़सम न करना, चीज़ों को मिलावट के साथ न बेचना, कम कीमत की चीज़ को ज़्यादा क़ीमत पर न बेचना, अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न होना।

कारोबार के बारे में इस्लामी शरीअत की रोशन हिदायतों से ये समझा जा सकता है कि कारोबारी इन्सान अपने कारोबार से केवल दुनियावी फ़ायदा ही हासिल नहीं करेगा बल्कि इन बातों पर अमल करने से अपनी आख़िरत को भी संभाल लेगा। लेकिन अफ़सोस है उन मुसलमान कारोबारियों पर जो ऐसा साफ़ सुथरा इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था होने के बावजूद दुनिया की बनावटी अर्थव्यवस्था से मरअूब और उसी पर अमल पैरा हैं। चीज़ों में मिलावट के बग़ैर अपना सामान बेचना बरकत की वजह नहीं समझते। ब्याज को शामिल किए बग़ैर अपना कारोबार कामयाब नहीं समझते। खरीदते बेचते समय क़सम पर क़सम खाना अच्छा अमल समझते हैं।

कारोबार क्योंकि समाज सेवा का भी बहुत बड़ा साधन है इसीलिए आप स0अ0 ने अच्छे अख़लाक़ वाले व्यापारी के बारे में ख़ूब बशारते सुनाईं हैं। फ़रमायाः "अल्लाह तआला उस शख़्स के साथ रहमत का मामला फ़रमाए जो ख़रीद फ़रोख़्त में नर्मी से पेश आता हो।" उसी तरह आम तौर पर बेचा हुआ सामान दुकानदार को वापिस रखना गरा गुज़रता है इसलिए फ़रमायाः "जो सामान को वापिस रख लेगा अल्लाह तआला उसके गुनाहों को क़यामत के रोज़ माफ़ फ़रमाएगा।" लेकिन अगर कोई इन्सान तिजारत को केवल लूट–खसोट, पैसा कमाने का ज़रिया समझता हो तो ऐसे व्यापारी के बारे में आप स0अ0 की ज़बान से बहुत सख़्त शब्द भी निकले है, फ़रमायाः "व्यापारी को क़यामत के दिन गुनहगार उठाया जाएगा सिवाए उसके जिसने कारोबार मे सच्चाई, तक़वा, का ख़्याल रखा हो।" मालूम हुआ, अगर इन्सान उस अमल को सुन्नत तरीक़े पर अन्जाम दे तो वो रोज़े क़यामत में नबियों, सच्चों व शहीदों के साथ जन्नती व्यापारी कहलाने का मुस्तहक़ होगा लेकिन अगर मामला इसके विपरीत है तो फ़ैसला ख़ुद उसके सामने है।

इस्लाम की सही तस्वीर

अब्दुल्लाह ख़ालिद क़ासमी

आजकल बड़े ज़ोर शोर से भारत में साम्प्रदायिक तत्व ये प्रोपगन्डा कर रहे हैं कि इस्लाम और उसके मानने वाले दूसरे धर्म वालों को बर्दाश्त करने के रवादार नहीं। इसीलिये घर वापसी के विषय से भारतीय मुसलमानों और दूसरे अल्पसंख्यकों के धर्म परिवर्तन की एक असंवैधानिक मुहिम जारी है और भारतीय समाज के सुख व शांति को समाप्त किया जा रहा है। हालांकि यह एक गुमराह करने वाली बात है। इसका वास्तविकता से कोई संबंध नही। यह इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करने की अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र का एक भाग है। बात ये है कि इस्लाम रहमत का दीन है। उसकी रहमत व मुहब्बत का दामन सारी मानवता के लिये व्यापक है। इस्लाम ने अपने मानने वालों को सख़्त हिदायत दी है कि वे दूसरी क़ौमों व धर्मवालों के साथ समानता, हमदर्दी, दुख बांटने व भाइचारे का मामला करें और इस्लामी राज्य में उनके साथ किसी भी प्रकार की ज़्यादती, भेदभाव व किसी भी प्रकार का अन्तर न किया जाये। उनकी जान व माल, इज़्ज़त व आबरू, माल व जायदाद और मानवाधिकारों की सुरक्षा की जाये। कुरआन पाक का इरशाद हैः "अल्लाह तुमको मना नहीं करता उन लोगों से जो लड़े नहीं दीन के सिलसिले में और निकाला नहीं तुमको तुम्हारे घरों से और उनके साथ करो भलाई व इन्साफ़ का सुलूक, बेशक अल्लाह चाहता है इन्साफ़ वालों को।" (सूरह मुमतहिन्नाः 8) इस आयत की तफ़सीर में हज़रत अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह0 लिखते हैं किः "मक्का में कुछ लोग ऐसे भी थे जो मुसलमान न हुए और मुसलमान होने वालों से कोई ज़िद और बैर भी नहीं रखा और न दीन के मामले में उनसे लड़े, न उनको सताने में और निकालने में ज़ालिमों का साथ दिया, इस तरह के ग़ैर मुस्लिमों के साथ भलाई से पेश आने को इस्लाम नहीं रोकता। जब वे तुम्हारे साथ नर्मी और भाईचारे से पेश आते हैं तो न्याय यही है कि तुम भी उनके साथ अच्छा बर्ताव करो और दुनिया को दिखला दो कि इस्लाम में व्यवहार का स्तर कितना श्रेष्ठ है। इस्लाम की शिक्षा ये नहीं कि अगर ग़ैर मुस्लिमों की एक क़ौम मुसलमानों से लड़ती झगड़ती नहीं है तो भी मुसलमान सभी ग़ैर मुस्लिमों को एक ही लाठी से हकेलना शुरू कर दें। ऐसा करना शासन व न्याय के विपरीत होगा।

दूसरे धर्म वालों के साथ सहयोग व असहयोग का इस्लामी नियम यही है कि उनके साथ मिलेजुले सामाजिक व राष्ट्रीय समस्याओं जिनमें शरई दृष्टिकोण से सहयोग करने में कोई मनाही न हो तो उनमें उनका साथ देना चाहिये।

दूसरे धर्मों या क़ौमों के कुछ लोग अगर मुसलमानों से सख़्त नफ़रत व दुश्मनी रखते हैं तो भी इस्लाम ने उनके साथ भाईचारगी की शिक्षा दी है। अल्लाह तआला का इरशाद हैः "बदी का बदला नेकी से दो फिर जिस शख़्स के साथ तुम्हारी दुश्मनी है वह तुम्हारा सहयोगी बन जायेगा।" (सूरह फुस्सिलतः 24)

भारत का वर्तमान सामाजिक व आर्थिक माहौल ऐसा बनाया जा रहा है जिसमें धर्मों में परस्पर नफ़रत की भावना को बढ़ावा दिया जा रहा है। एक दूसरे के धार्मिक व संवैधानिक अधिकारों पर डाका डाला जा रहा है। सत्ता के ज़ोर पर धर्म परिवर्तन करने पर मजबूर किया जा रहा है और सरासर संवैधानिक अधिकारों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। इस्लाम की स्वाभाविक शिक्षा ऐसे हालात में यही है कि तुम्हारे धर्म और तुम्हारी धार्मिक पहचान से घृणा करने वाले जो लोग हैं उनकी भ्रांतियां दूर की जाएं। इस्लामी शिक्षा से उनको परिचित कराया जाए। उनको बताया जाये कि इस्लाम अमन व शांति व कृपा का संदेशवाहक है। इसकी शिक्षाओं में पूरी मानवता के लिए सुख व शांति है। इस्लाम किसी वर्ग विशेष या जमाअत विशेष के लिये मार्गदर्शन नहीं करता है बल्कि उसके दामन में पूरी मानवता को सुकून मिलेगा।

आज जो ये हालात पैदा हुए हैं और हो रहे हैं इसमें बहुत बड़ा कारण इस बात का है कि इस्लाम की सही और सच्ची तस्वीर हम मुसलमान दूसरों के सामने नहीं प्रस्तुत कर पा रहे हैं और इसका प्रयास भी नहीं हो रहा है। यदि इस ओर क़दम उठाया जाये और इस समय इस्लाम के प्रचार व प्रसार के विषय से इसको कर्तव्य के तौर पर अपनाया जाए तो यक़ीन है देश के दूसरे भाइयों की भ्रांतियां अवश्य दूर होंगी और उनकी दुश्मनी में अवश्य

कमी आयेगी।

हमारी धार्मिक पहचान में एक बहुत बड़ी चीज़ पांच वक़्त की नमाज़ों के लिये अज़ान है। पूरे देश के लगभग सभी क्षेत्रों में (जहां दो चार घर भी मुसलमानों के हैं) अज़ान दी जाती है। ग़ैर मुस्लिम भाई इससे भय महसूस करते हैं। जिहालत और हमारी ग़फ़लत के कारण अधिकतर लोगों के ज़हन में ये बात है कि "मुसलमान अज़ान के ज़रिये मुग़ल बादशाह अकबर को याद करते हैं।"

आवश्यकता इस बात की है कि अज़ान का अर्थ एवं उसका संदेश उन्हें उनकी ज़बान में समझाने का प्रयास किया जाये। उनको बताया जाये कि यद्यपि ये इस्लामी पहचान है लेकिन अगर इसके अर्थ को देखा जाये तो सरासर हम सबके पैदा करने वाले और सबको पालने वाले परवरदिगार की बड़ाई का ऐलान है। जिस ज़ात ने हम सबको पैदा किया फिर जीवन व्यतीत करने के लिये सारी सुविधांए उपलब्ध करायीं, अक़्ल व समझदारी की बात तो यही है कि पूजा और इबादत और बन्दगी केवल उसी की होनी चाहिये। इस अज़ान में इसी बात का स्वीकार्य है। इन्सानों की हिदायत और दुनिया व आख़िरत मे सुकून और चैन का जीवन मिले इसी क्रम की शिक्षा और आदेशों को लेकर अल्लाह की ओर से जिस पवित्र व्यक्ति को दुनिया में भेजा गया उसकी रिसालत व नुबूव्वत की शहादत व गवाही उस अज़ान में है। दुनिया व आख़िरत की भलाई व कामयाबी उसी पालनहार और अस्ल माबूद के बताए हुए इबादत के तरीक़े में है। अज़ान में उसी इबादत की तरीक़े की ओर बुलाया जाता है और दुनिया को रोज़ाना पांच वक़्त यही सब याद दिलाया जाता है।

अस्ल माबूद को सबसे बड़ा मानना, उसी को अस्ल माबूद जानना, इन्सानों की भलाई के लिये उसके भेजे हुए पैग़म्बर व रसूल व अवतार की रिसालत व नुबूव्वत की गवाही देना, दुनिया व आख़िरत की भलाई व सफ़लता वाले इबादत के तरीक़े की ओर लोगों को बुलाना, यही तो अज़ान का ख़ुलासा है। यदि सही रूप से इसकी व्याख्या की जाए, इसके अर्थ को बताया जाए तो यक़ीनन जो इससे भयभीत होते हैं वे भी इन शब्दों के सुनने वाले बन जाएंगे। आपसी नफ़रत समाप्त हो जायेगी।

लेकिन इसके लिये ज़रूरी है कि हम मुसलमान पहले ख़ुद अज़ान के अर्थ को जाने और उसकी मांग से परिचित हों। हम पहले ख़ुद ये जान लें कि अज़ान की बरकतें क्या हैं?दुनिया में उसके क्या फ़ायदे हैं?अज़ान का प्रभाव क्या है? अफ़सोस की बात है कि हम दावत वाली उम्मत होकर भी अज़ान तक के अर्थ से परिचित नहीं हैं तो इस्लाम की दूसरी पहचानों के बारे में हमारा क्या हाल होगा?

भारत के वर्तमान हालात में इस बात की अत्यधिक आवश्यकता है कि आपसी सहयोग का वातावरण उत्पन्न किया जाए। ग़ैर मुस्लिम भाइयों को अपने से क़रीब किया जाए। इस्लामी शिक्षाओं की उनकी भाषा में व्याख्या की जाए ताकि इस्लाम की स्वाभाविक शिक्षाओं को ये लोग जानें और उनका भय और उनकी नफ़रत समाप्त हो। और ये उसी समय संभव है जब हम स्वयं अपने धर्म एवं उसकी शिक्षाओं का ज्ञान रखेंगे। उनको सीखने और स्वयं पर लागू करने का प्रयास करेंगे।

शेष : इस्लामी में सफ़ाई सुथराई

आज की परिस्थितियों में जहां इस्लाम की दूसरी बहुत सी शिक्षाओं और ख़ूबियों पर पक्षपात के मोटे पर्दे डाल दिए गये हैं। वहीं सफ़ाई के क्रम में इस्लाम के आधारभूत और व्यापक आदेशों को भी उपेक्षित कर दिया गया, बल्कि वास्तविकता ये है कि इस्लाम की उन ख़ूबियों को पश्चिमी सभ्यता ने अपनाकर अपनी सौग़ात के तौर प्रस्तुत कर दिया और इस्लाम को हर संभव तरीक़े से बदनाम करने का प्रयास किया गया। उसका मौलिक कारण यह है कि अगर इस्लाम की ये विशेषताएं और छोटी–छोटी बातों पर भी इस्लाम की रोशन और स्पष्ट नसीहतें लोगों के सामने आने लगेंगी तो लोग इधर–उधर ठोकरें खाने के बजाए सिर्फ़ इस्लामी आदेशों पर ही संतोष करने लगेंगे और फिर झूठ और ग़लत बयानी और प्रोपोगन्डो का जो बाज़ार गर्म है वह ठप पड़ जाएगा।

इसलिये आवश्यक है कि सफ़ाई सुथराई के क्रम में इस्लाम की शिक्षाओं का अपक्षपात पूर्ण निरीक्षण किया जाए और उसका मौलिक कर्तव्य मुसलमानों का है कि जब वे अपने जीवनों में इन आदेशों को लागू करेंगे तो दूसरे स्वयं उन वास्तविकता ओं को समझेंगे और इस्लामी शिक्षाओं से जो दूरी अपनायी जा रही है वह दूर होगी और मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों के बीच जो खाई स्थापित होती जा रही है वह ख़त्म हो सकेगी।

सूर्य नमस्कार और मुसलमानों का पक्ष

सबाह इस्माईल नदवी

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने अपने जयपुर के जलसे में जहां दूसरी समस्याओं के हल को तलाशने का प्रयास किया वहीं "सूर्य नमस्कार" के विरुद्ध भी कड़ा संज्ञान लिया और स्पष्ट शब्दों में ये घोषणा कर दी कि इस देश के क़ानून ने हमें अधिकार दिया है कि हमें किसी ऐसे काम के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता जो हमारे धर्म के विपरीत हो। सूर्य नमस्कार शुद्ध रूप से एक मुश्रिकाना और ग़ैर मोमिनाना कार्य है। मुस्लिम छात्र व छात्राएं किसी भी हाल में सूर्य नमस्कार नहीं करेंगे। यदि मुस्लिम छात्र व छात्राओं को सूर्य नमस्कार के लिए विवश किया गया तो वे स्कूल छोड़ने और उसके विरुद्ध क़ानूनी लड़ाई लड़ने पर मजबूर हो जाएंगे।

सवाल ये है कि सूर्य नमस्कार क्या है?ये सीधे शब्दों में सूरज को सलाम करने, उसका सम्मान करने, उसको पूज्य मानने और उससे कोई सवाल करने के बराबर है। यह काम मुसलमानों के निकट अस्वीकार्य है कि वे अल्लाह के सिवा किसी और के आगे झुकने, उसको पूजने और उससे कुछ मांगने के बारे में विचार भी करे।

ये बात बिलकुल स्पष्ट है कि दुनिया में अल्लाह के अलावा जिन लोगों की पूजा की जाती है, उनमें सबसे महत्वपूर्ण सूर्य है। इसका कारण साफ़ है कि केवल दिखने वाली चीज़ों को मानने वाले लोगों के लिए सबसे बड़ा चमत्कार सूर्य है। दुनिया की अधिकतर मुश्रिक क़ौमें किसी न किसी रूप में सूरज की पूजा करती हैं। हम इब्राहीम अलै0 की घटना भी हम देखते हैं कि जब वे ख़ुदा की तलाश में भटक रहे थे और हर चीज़ को ग़ौर से देख रहे थे उस समय सूरज के बारे में कहा था कि दिखाई देने वाली चीज़ों में अगर कोई चीज़ ख़ुदा हो सकती है तो वो सूरज ही है क्योंकि दूसरी सारी चीज़ों के मुक़ाबले सूरज ज़्यादा बड़ा, अत्यधिक महत्वपूर्ण, बहुत लाभ पहुंचाने वाला, बहुत ज़्यादा जलाने, सताने और रुलाने वाला है। उसके जाने से रात हो जाती है और उसके आने से हर चीज़ रोशन हो जाती है। ये अगर न हो तो दुनिया का कारोबार इधर–उधर हो जाए। इसी लिए हम देखते हैं कि दूसरी क़ौमों की तरह हिन्दू क़ौम भी उसकी पूजा करती है और अब जब कि ये भारत का संविधान परिवर्तित करने की पोज़ीशन के क़रीब हैं तो ये चाहते हैं कि सभी भारतवासियों को सूर्य की पूजा पर मजबूर किया जाए। ये हिन्दुत्ववादियों के लम्बे घर वापसी प्रोग्राम का एक हिस्सा है और इसका आरम्भ सूर्य नमस्कार, गीता पाठ और सरस्वती वन्दना जैसे कार्यों से होता है।

जहां तक बात मुसलमानों की है तो एकेश्वरवाद की आस्था उनकी विशेषता व श्रेष्ठता है। शिर्क का हल्का सा विचार भी उनके जिस्म को लरज़ा देता है। उनको शिक्षा दी गयी है कि वे अपने आप को मुश्रिकाना आस्थाओं व कार्यों से कोसों दूर रखें। विशेषतयः सूरज के संबंध से उनको बहुत ही एहतियात करने का आदेश दिया गया है। दिन भर में केवल तीन समय ऐसे हैं जब नमाज़ को किसी हद तक मकरूह क़रार दिया गया है। पहला सूरज निकलने का समय, दूसरा जब सूरज बिल्कुल सर पर हो, और तीसरा जब सूरज डूब रहा हो और उसकी एक ख़ास हिकमत व मसलहत यही है कि ये वो समय हैं जब सूरज के पुजारी सूरज की पूजा करते, उसको नमस्कार करते और उसके आगे हाथ जोड़ते हैं। कहीं ऐसा न हो कि कोई मुश्रिक इस समय किसी मुसलमान को नमाज़ पढ़ता देखकर ये न सोचे कि मुसलमान भी तो सूरज की पूजा करते हैं, बस उनकी इबादत का तरीक़ा हमारे तरीक़े से अलग है।

ज़रा सोचिए! इस्लाम तो अपने मानने वालों को सूरज की पूजा के शुब्हे से भी दूर रखना चाहता है और हिन्दु ताक़तें चाहती हैं कि मुसलमान सूर्य नमस्कार में हिस्सा लें। इसमें कोई शक नहीं कि यह असंभव है। इसीलिए बोर्ड ने साफ़ शब्दो में मुसलमानों का ये फ़ैसला वर्तमान सरकार के सामने रख दिया है कि ऐसा कोई भी आदेश मुसलमान कभी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होंगे, सरकार इस बात का ख़्याल रखे।

यहां बहरहाल ये साफ़ कर देना आवश्यक है कि सूर्य नमस्कार केवल सूर्य के आगे हाथ जोड़ने का काम नहीं, बल्कि बाक़ायदा विभिन्न योगाओं पर आधारित एक ऐसा कार्य है जो हिन्दु धर्म की एक स्थायी पूजा है। इसमें विभिन्न प्रकार के आसन किए जाते हैं। पहला "प्रणाम आसन" है जिसमें हाथ जोड़कर प्रणाम किया जाता है। और ये इबादत की शक्ल है। दूसरा "हाथ उठान आसन" वरज़िश की भांति शरीर को सीधा रखकर दोनो हाथ ऊपर की ओर उठाए जाते हैं। .....(शेष पेज 19 पर)

मुसलमानों के विरुद्ध मुहिम का परिदृष्य

जनाब आरिफ़ अज़ीज़

जब से देश मे नये शासन ने काम करना आरम्भ किया है, तब से मुसलमानों को साम्प्रदायिक शक्तियों की ओर से भिन्न–भिन्न प्रकार की सलाहें दी जा रही हैं। कभी उनसे कहा जाता है कि वे अपने सोचने के तरीक़े को बदलें। वे पहले भारतीय हैं, फिर मुसलमान। उनके पूर्वज हिन्दु थे, जिसकी जानकारी के लिए मुसलमानों का डी एन ए कराया जाना चाहिए, इत्यादि। मुसलमानों को इस प्रकार की राय देने के कई उद्देश्य हैं। एक ये भी है कि मुसलमान अपने देश के प्रति वफ़ादार बनें यानि आज उनकी वफ़ादारी भरोसे के लायक़ नहीं। इस बात के पीछे जो सोच काम कर रही है वह बहुसंख्यक को देश की मुख़्तार आला समझने और अल्पसंख्यकों विशेषतयः मुसलमानों दूसरे दर्जे का नागरिक समझने का एहसास है। इस आधार पर कभी मुसलमानों से अपना "सिविल कोड" बदल कर "कॉमन सिविल कोड" अपनाने की मांग होती है। कभी उनकी ज़ाति पहचान पर उंगली उठायी जाती है तो कभी उन पर देश के प्रति वफ़ादार रहने का ज़ोर डाला जाता है।

ऐसे लोग प्रथम तो इस वास्तविकता से परिचित नहीं या अपने बहुसंख्यक होने के घमन्ड में जानबूझ कर ऐसी सच्चाई को भूल जाते हैं कि इस्लाम वह इकलौता धर्म है जो किसी भी प्रकार के भौगोलिक बंटवारे का क़ायल नहीं रहा इसके लिए केवल आस्ता का मसला ही अन्तिम व स्थायी है। भौगोलीय सीमाएं उनको बदल नहीं सकती। जहां तक रहन–सहन पर क्षेत्रीय प्रभाव का प्रश्न है तो उनको भारतीय मुसलमानों में भी आसानी से देखा और समझा जा सकता है। विभिन्न देशों में मुसलमानों के सांस्कृतिक श्रेष्ठताओं या मसलिकी भिन्नताओं को कुछ दूसरे क्षेत्रों के इस्लाम की संज्ञा देना और उस आधार पर बदलाव की बात करना अगर शरारत नहीं तो नासमझी ज़रूर कही जाएगी।

इस प्रकार की सोच रखने वाले लोग यह भी भूल जाते हैं कि देश के साथ वफ़ादारी, आत्मिक संबंध, सांस्कृतिक विशेषताएं और संबंध व रिश्तेदारियां ये सब अलग–अलग नवैय्यत की मज़हरें जिनको आपस में मिलाया नहीं जा सकता है। देश का कोई भी अल्पसंख्यक अपने धर्म पर रहते हुए भारतीय हो सकता है। बिल्कुल उसी तरह जिस तरह बर्मा और जापान के बौद्ध, बौद्ध भी हैं, और बर्मी व जापानी भी। या नेपाल के हिन्दु, हिन्दु भी हैं और नेपाली भी। ऐसा तो नहीं कि हिन्दुस्तान के बाहर जितने भी बौद्ध या हिन्दु रहते हैं उन सबकी पहली वफ़ादारी हिन्दुस्तान के साथ हो और उसके बाद की वफ़ादारी उन देशों से जहां वे रहते हैं। यदि श्रीलंका, बर्मा, जापान के बौद्ध सारनाथ, गया और सांची के साथ और भारत के सिक्ख पाकिस्तान में स्थित ननकाना साहब और पंज साहब से आत्मीय संबंध रखते हुए भी अपने देश के वफ़ादार नागरिक बन सकते हैं तो भारतीय मुसलमान की वफ़ादारी पर केवल इसलिए शक करना कि वे काबे की ओर मुंह करके नमाज़ अदा करते हैं या हज करने हिजाज़ जाते हैं या भारतीय राष्ट्रवाद का एक हिस्सा होने के साथ वे एक अन्तर्राष्ट्रीय आत्मीय कुन्बे के भी सदस्य हैं, क्या ये शरारत नहीं है?

अस्ल में, सामूहिक जीवन के राजनीतिक व व्यक्तिगत दो पहलू होते हैं और देश एक शुद्ध राजनीतिक संस्था है, व्यक्तिगत नहीं। जब ये आधारभूत सत्यता भुला दी जाती है तो बहुसंख्यक देश के सर्वाधिकार को अपने नाम सुरक्षित करा लेते हैं। और देश व शासन की एजेंसियों को कम संख्यां वाले गिरोहों पर अपनी व्यक्तिगत विशेषताएं थोपने के लिए प्रयोग करने लगती हैं। बहुमत व अल्पमत के बीच भ्रान्ति, नफ़रत व विरोधाभास का आरम्भ यहीं से होता है भारत में सामप्रदायिक तनाव के हामी तत्व आज इसी ग़लतफ़हमी में पड़े हैं और यही कारण है कि उनको उन मुसलमानों की वफ़ादारी में शक नज़र आता है जो बहुसंख्यकों की व्यक्तिगत पहचान को अपनाने के समर्थन में नही हैं। जब ये सोच आम हो जाती है तो अल्पसंख्यकों का हर जातिगत प्रदर्शन राष्ट्रवाद के मुतवाज़िन इश्तराक के बजाए असहनीय ज़्यादती नज़र आने लगती है और आगे चलकर यही देश में फूट का कारण बनता है।

भारत में आज से नहीं कोई साठ–सत्तर साल से इन्हीं विचारों का प्रचार हो रहा है और बहुसंख्यकों की

कुछ कट्टरवादी संस्थाएं यही बात ज़ोर देकर कह रही हैं कि राजनीतिक जीवन में धार्मिक, सांस्कृतिक साम्प्रदायवाद की कोई गुंजाइश नहीं और कोई भी साम्प्रदाय वादी राजनीतिक व्यवस्था उन्हें बर्दाश्त नहीं जैसे मुसलमान अगर देश व क़ौम के वफ़ादार बनना चाहते हैं तो उन्हें पहले अपनी जातिगत पहचान या दूसरे शब्दों में कहें तो सामूहिकता को समाप्त करना पड़ेगा। हालांकि जातिगत पहचान हो या सामूहिकता ये कुछ लोगों की आवश्यकता की पूर्ति का काम करते हैं और उन्हें अनदेखा करके इस देश का भला नहीं किया जा सकता।

वास्तव में संघ परिवार की सोच ये है कि भारत में केवल एक जाति आबाद है और वह "हिन्दु जाति" है। लोगों की इबादत के तरीक़े अलग–अलग हो सकते हैं किन्तु आधारभूत रूप से वे सब हिन्दु सभ्यता से बंधे हुए हैं अतः यहां का हर नागरिक हिन्दु है। जो स्वयं को हिन्दु कहने या समझने से परहेज़ करे, वह देश से निकल जाए उसके लिए भारत में कोई जगह नहीं होनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति या वर्ग स्वयं को हिन्दुस्तानी कहता है तो उसका भी कोई महत्व नहीं उसे ख़ुद को हिन्दु ही कहना और समझना पड़ेगा।

हिन्दु कहलवाने पर साम्प्रदायिक ताक़तो की यह ज़िद इसलिए है कि ताकि कुछ अर्से बाद ज़हनी तौर पर मुसलमान और दूसरे अल्पसंख्यक ये भूल जाएं कि वास्तव में वे कौन हैं और किस धर्म से संबंध रखते हैं?जब उनके बच्चे अपने माता–पिता से यह सुनकर होश संभालेंगे कि हम हिन्दु हैं तो आगे चलकर नई पौध स्वयं को हिन्दु मानने लगेगी। पहले वे रस्म व रिवाज और सभ्यता व संस्कृति के तौर पर हिन्दुत्व के रंग में रंगेगी। फिर समय के साथ–साथ अपने धर्म से एवं अपनी आस्था से बरगश्ता हो जाएगी। इसीलिए संघ परिवार भारत में "हिन्दुत्व" की बुलन्दी पर ज़ोर देता रहा है और धर्मनिरपेक्षता से देश के जुड़ाव को समाप्त कर देना चाहता है।

ये और बात है कि भारत जैसे विशाल देश में जहां विभिन्न धर्मों, भाषाओं, सभ्यताओं के मानने वाले आबाद हैं उनको बहुसंख्यकों के रंग में नहीं रंगा जा सकता है और इस प्रकार के सभी प्रयासों के परिणाम देश को तबाह करने वाले साबित होंगे लेकिन इसकी चिन्ता कट्टरवादी विचार धारा के समर्थक हिन्दुत्व के ध्वजवाहकों को नहीं। उनके दिल व दिमाग़ में तो बस अल्पसंख्यकों को अपने अन्दर समाहित कर लेने का भाव ठाठे मार रहा है, हालांकि ये देश को स्थिरता नहीं प्रदान कर सकता है। इसके लिए खुला हुआ दिल, अपनाइयत एवं भाइचारे की आवश्यकता पेश आएगी और साम्प्रदायिक ताक़तों के यहां इसकी गुंजाइश नहीं।

शेष : सूर्य नमस्कार और मुसलमानों का पक्ष

ये सूर्य नमस्कार का दूसरा और ग्राहवां भाग है। तीसरा "हाथ पर आसन" है इसमें हाथ से पांव पकड़े जाते हैं। ये सूर्य नमस्कार का तीसरा और दसवां भाग है। चौथा "अश्वसंचालन आसन" जो जांघों और पैरों की मज़बूती की वरज़िश है। ये सूर्य नमस्कार चौथा और नवां भाग है। पांचवां भाग "दण्डासन" है जिसमें लकड़ी का रूप धारण किया जाता है। इसमें बाज़ू, पेट और रीढ़ की हड्डी की वरज़िश भी है। सूर्य नमस्कार का छठा भाग "अशतन्गा नमस्कार" है जिसमें शरीर के आठ हिस्सों को ज़मीन पर लटकाकर सलामी दी जाती है। सातवां कार्य "भुजंग आसन" कहलाता है जिसमें सांप की शक्ल बनायी जाती है। आठवां कार्य "पर्वत आसन" है जिसमें सूर्य नमस्कार करने वाला पहाड़ की शक्ल बनाने का प्रयास करता है। सूर्य नमस्कार का आख़िरी एवं बारहवां कार्य "टड आसन" कहलाता है, इसमें भी पहाड़ जैसी शक्ल बनाकर वरज़िश की जाती है।

मुसलमानों को कम अक़्ल समझने वाले ये लोग कहते फिर रहे हैं कि ये सूर्य नमस्कार एक प्रकार की कसरत है जिसके द्वारा दिमाग़ को सुकून मिलता है और शरीर की सेहत के लिए भी यह लाभकारी है। इसके करने में आख़िर हर्ज क्या है? उन लोगों से कहा जा सकता है कि नमाज़ के अन्दर भी ये ख़ूबियां पायी जाती हैं बल्कि सूर्य नमस्कार से कहीं ज़्यादा लाभदायक छात्रों के लिए नमाज़ अदा करना है तो क्या वे नमाज़ सभी स्कूलों के छात्रों के लिए अनिवार्य कर सकते हैं?इसमें कोई शक नहीं कि मुसलमानों की ज़िद और विरोध के बाद यह कहा गया है कि मुसलमान बच्चे और बच्चियां अगर चाहें तो ख़ुद को सूर्य नमस्कार से अलग रख सकते हैं, मगर क्या इस प्रकार ये बच्चे स्कूलों में दूसरे बच्चों और अध्यापकों से कटकर नहीं रह जाएंगे और क्या उनके साथ अन्याय पूर्ण बर्ताव में वृद्धि नहीं हो जाएगी?

ईमान की हरारत

अबुल अब्बास ख़ाँ

ये हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 की ख़िलाफ़त का ज़माना है। विजयों का क्रम जारी है। इस्लामी फ़ौजें रोम की सीमा में प्रवेश कर चुकी हैं। काफ़िर फ़ौज़े भी मुक़ाबले के लिए तैयार हैं। रोम के शहंशाह क़ैसर का फ़रमान जारी होता है कि अगर मुसलमान सैनिक गिरफ़्तार हों तो उन्हें क़त्ल न किया जाए बल्कि उसके दरबार में हाज़िर किया जाए। खुदा की मर्ज़ी कुछ मुसलमान दुश्मन के घेरे में आ गये। उनमें सहाबी–ए–रसूल स0अ0 अब्दुल्लाह बिन ख़ुज़ाफ़ा रज़ि0 भी थे। सिपाहियों ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया और क़ैसर के दरबार में हाज़िर किया।

क़ैसर ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुज़ाफ़ा रज़ि0 को ग़ौर से ऊपर से नीचे तक देखा। संतुष्ट चेहरा, न डर न घबराहट, सर से पैर तक बेड़ियाँ, लेकिन हौसला दुनिया जीत लेने का! क़ैसर ने बड़ी अपनाइयत से कहा कि अगर तुम ईसाई धर्म अपना लो तो मैं तुम्हारी जान बख़्श दूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुज़ाफ़ा रज़ि0 ने हिक़ारत और नफ़रत से उस बात को ठुकरा दिया और कहा, "मौत मुझे तुम्हारी इस पेशकश से हज़ार गुना ज़्यादा महबूब है।"

क़ैसर ने कुछ सब्र से काम लिया। उसकी नज़रों में उम्मीद की चमक बाक़ी थी। दुनिया में हर इन्सान बिकता है। उसने क़ीमत लगायी कि अगर तुमने मेरा धर्म अपना लिया तो मैं तुम्हें शासन में सम्मिलित कर लूंगा।

लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुज़ाफ़ा रज़ि0 ने कड़े लहजे में और पूरे जोश के साथ कहा कि मुझे तुम अरब व अजम की बादशाहत भी दे दो तब भी मैं दीन–ए–मुहम्मदी स0अ0 के एक नुक़्ते को भी नहीं छोड़ सकता।

क़ैसर ये जवाब सुनकर तिलमिला उठा। सांस फूलने लगी। मुंह से झाग निकलने लगा। चेहरे का रंग लाल हो गया। खुदाई का दावा करने वाला बादशाह एक साधारण से अरबी से मात खा रहा था। पराजय की चोट उसकी आत्मा पर पड़ रही थी। गुस्से में आदेश दिया कि उसे तीरों से छलनी कर दिया जाए, लेकिन ये सोच कर कि इसमें तो उसी की हार है उसने तीरन्दाज़ को कुछ इशारा किया।

तीरन्दाज़ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुज़ाफ़ा रज़ि0 के चारों तरफ़ तीर बरसाए और क़ैसर कहता रहा कि इस दर्दनाक मौत से बचने का केवल एक ही मार्ग है कि मेरी बात मान लो लेकिन हर तीर पर वे सख़्ती से इनकार करते रहे।

क़ैसर ने आदेश दिया कि आग जलायी जाए। फिर तेल से भरी एक डेग उस पर चढ़ा दी गयी। तेल खौलने लगा। दो मुसलमान क़ैदियों को लाया गया। उस खौलते हुए तेल में उन्हें ज़िन्दा डाल दिया गया। उनकी चीख़ों से दरबारियों की रूह कांप उठी। बदन से गोश्त जलभुन कर अलग हो गया। हड्डियां तैरने लगीं। पूरे माहौल पर सन्नाटा छा गया। किसी में हिम्मत न थी कि वो अपनी ज़बान को हरकत दे सके। क़ैसर क़हर व ग़ज़ब का पुतला बना हुआ था। उसकी आंखों से खुदाई का एहसास छलक रहा था। उसकी आवाज़ से बड़ाई व घमन्ड झलक रहा था। उसने गरजते हुए कहाः अगर तुमने ईसाईयत को कुबूल न किया तो तुम्हारा अन्जाम इससे ज़्यादा दर्दनाक होगा।

ज़ंजीरों में जकड़े हुए बोझिल क़ैदी ने अपनी नज़रे ऊपर उठायीं, निढ़ाल जिस्म में ताक़त एकत्र की और सीना तानकर कहा, "खुदा की क़सम तुम मेरे ईमान का सौदा नहीं कर सकते।"

क़ैसर ने झुंझलाकर कहा ले जाओ इसे और खौलते हुए तेल में डाल दो। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुज़ाफ़ा रज़ि0 की आंखों से आंसू छलक पड़े। क़ैसर ने समझा कि मौत के डर ने कमज़ोर कर दिया है। उनकी हिम्मत जवाब दे चुकी है। अब उनके अन्दर बर्दाश्त की ताक़त नहीं। उसने कहा कि ईसाईयत कुबूल कर लो, मैं तुम्हारी जान बख़्श दूंगा। लेकिन उन्होंने सख़्ती से इनकार कर दिया। क़ैसर ने कहा कि फिर तुम्हारी आंखों से ये आंसू कैसे छलके?

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुज़ाफ़ा रज़ि0 ने कहा कि मुझे ख़्याल आया कि अभी मुझे डेग में डाला जाएगा। मेरी रूह निकल जाएगी। जबकि मेरी ख़्वाहिश थी कि मेरे जिस्म में जितने बाल हैं, मेरे अन्दर उतनी जान होती, और खुदा की राह में हर जान एक–एक करके इस डेग में डाल दी जाती।

ये जवाब सुनकर क़ैसर का गुस्सा जाता रहा। उसका तना हुआ जिस्म ढीला पड़ गया। वो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुज़ाफ़ा रज़ि0 के क़रीब आया और बड़ी नर्मी से आख़िरी बात कही कि अगर तुम मेरे सर को बोसा दे दो तो मैं तुम्हें और तुम्हारे साथियों को रिहा कर दूंगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुज़ाफ़ा रज़ि0 कुछ देर ग़ौर किया कि काफ़िर का सर चूमना है लेकिन ये कोई शरीअत के ख़िलाफ़ काम न था। अतः उन्होंने क़ैसर के सर को चूमा। क़ैसर ने अपना वादा पूरा किया और सभी मुस्लिम क़ैदियों को भी रिहा कर दिया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुज़ाफ़ा रज़ि0 ने हज़रत उमर रज़ि0 से सारी बात बतायी। हज़रत उमर रज़ि0 क़ैदियों को देखकर बहुत ख़ुश हुए और कहा कि हर मुसलमान पर हक़ है कि अब्दुल्लाह रज़ि0 के सर को चूमे, और ये हक़ सबसे पहले मैं अदा करता हूँ।

आवाज़ का फ़ित्ना

अच्छी शक्ल की तरह अच्छी आवाज़ भी अल्लाह की देन है और जिसको मिले उसके लिए नेमत है। लेकिन हर नेमत आदमी की ज़रा सी लापरवाही से मुसीबत बन जाया करती है और इसी में इन्सान का इम्तिहान भी है कि वो केवल पल भर के मज़े और ख़त्म हो जाने वाली ख़ुशी के लिए अपने जीवन का त्याग कर देता है या उसे शरीअत के नियमों की पाबन्दी का ध्यान रहता है। जो नफ़्स पर कभी-कभी भारी पड़ने के बावजूद हमेशा की राहत और आराम व सुकून की ओर ले जाने वाली है। आपस की बातचीत उन साधनों में से है जिनके द्वारा आदमी अपने जीवन की समस्याओं को हल किया करता है। बातचीत जिस तरह मर्द और मर्द के बीच होती है उसी तरह मर्द और औरत के बीच भी हो सकती है। मर्द और औरत के बीच अगर किसी इल्मी या इल्म की ज़रूरत से बातचीत हो जैसे- उस्ताद और शार्गिद, डाक्टर और मरीज़ के बीच बातचीत हुआ करती है तो है तो उसे ग़लत नहीं समझा जा सकता है और न उस पर पाबन्दी लगायी जा सकती है। लेकिन ऐसी बातचीत जिसमें लोच हो और जिससे एक पक्ष दूसरे पक्ष की भावनाओं को भड़काने का प्रयास करे, बातचीत से फ़ित्ना ज़ाहिर हो तो ऐसी बातचीत से और ऐसी आवाज़ से परहेज़ करना दोनों पक्षों के लिए आवश्यक है। इस प्रकार की आवाज़ से, बातचीत से समाज विभिन्न प्रकार की सामूहिक व व्यवहारिक कठिनाइयों में पड़ चुका है और यदि इस ओर पूरा ध्यान न दिया गया तो पड़ता चला जाएगा।

अल्लाह तआला ने इसीलिए ख़ुद आप स0अ0 की पत्नियों को नसीहत फ़रमायी कि "ऐ नबी की पत्नियों, आप आम औरतों की तरह नहीं हैं, अत: तक़्वे की मांग ये है कि बातचीत में लोच पैदा न करें, जिससे बुरे मन के आदमी को लालच हो। हां बातचीत हो तो साफ़ तरीक़े से बातचीत करें।" बहुत सी औरतों की आवाज़ में बहुत ज़्यादा कशिश होती है। इसीलिए किताबों में लिखा हुआ है कि ऐसी औरतें अजनबी मर्दों से बातचीत के दौरान एक हद तक सख़्ती और करख़्तगी का लहजा रखें। आवाज़ यक़ीनन एक फ़ित्ना है। इसके फ़ित्ना होने से इनकार नहीं किया जा सकता है। आवाज़ के फ़ित्ने की वजह से शरीअते इस्लामिया ने औरतों को "अज़ान" देने की इजाज़त नहीं दी। आवाज़ मर्दों की हो या औरतों की, ऐसे लहजे से बात करना या शेर व कलाम पढ़ना कि जिससे इनसान के जज़्बात भड़कें, न मर्दों के लिए जायज़ है न औरतों के लिए। आपस में औरतों और मर्दों के बीच सलाम करने में भी इसीलिए ज़ाब्ता रखा गया है कि अगर सलाम करने या जवाब देने से फ़ित्ने का अंदेशा हो तो उससे पूरी तरह से परहेज़ किया जाए। इसीलिए किसी अच्छी शक्ल व सूरत की औरत को कोई आदमी सलाम करे और ऐसी जगह या माहौल में सलाम करे जहां फित्ने का गुमान हो तो उसका जवाब देना जायज़ नहीं है। लेकिन बहुत बूढ़ी औरतों और ख़ानदान की एहतराम वाली औरतों को सलाम करने में कोई हर्ज नहीं है। यर्थाथ ये कि समाज में औरत एक अहम किरदार का नाम है और समाज की पवित्रता मर्द और औरत के बीच रिश्ते की पाकीज़गी पर है, लिहाज़ा समाज को जितना पाक रखा जाए, समाज उतना ही सुकून वाला, सभ्य और नेक होगा।

मौलाना बदरुल हसन क़ासमी

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

ISSUE:05 MAY 2015 VOLUME: 07

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
AT A GLANCE

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.